।। ओ३म् ।।

# आर्यावर्त केसरी

वार्षिक शुल्क : 100/-
आजीवन : 1100/-
(विदेश में) 5 वर्ष के 35 डॉलर

विश्व भर में भारतीय संस्कृति का उद्घोषक पाक्षिक

आर.एन.आई.सं.
UP HIN/2002/7589
डाक पंजीकरण संख्या-
UP MRD Dn-64/2018-20
दयानन्दाब्द १९५
मानव सृष्टि सं.- १९६०८५३११९
सृष्टि सं.- १९७२९४९११९

वर्ष-17 | अंक-25 | चैत्र शु. 12 से बैशाख कृ. 11 सं. 2076 वि. | 16-30 अप्रैल 2019 | अमरोहा, उ.प्र. | पृष्ठ-12 | प्रति-5/-


## पदम्श्री आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी जी के आशीर्वाद एवं सहयोग से

# टंकारा में धूमधाम से हुआ ऋषि बोधोत्सव

अजय सहगल
टंकारा (राजकोट)।

दिनांक 26 फरवरी से 04 मार्च 2019 तक का सम्पूर्ण ऋषि बोधोत्सव पदमश्री डॉ0 पूनम सूरी जी की अध्यक्षता में उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। ऋग्वेद पारायण यज्ञ 26 फरवरी से टंकारा स्थित उपदेशक विद्यालय के आचार्य रामदेव जी के ब्रह्मत्व में प्रारम्भ हुआ। मुख्य यजमान डॉ0 रमेश आर्य, उपप्रधान, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति, मुंजाल परिवार एवम् श्री योगेश मुंजाल, श्री सुधीर मुंजाल, श्री लधाभाई पटेंल आदि थे। पूरे सप्ताह आर्य जगत् के प्रसिद्ध गायक एवं भजनोपदेशक श्री सत्यपाल पथिक (अमृतसर) एवं श्री जगत वर्मा (जालन्धर) के मधुर भजन प्रातः एवं सांय होते रहे।

02 मार्च 2019 को रात्रि 8 बजे से 10 बजे तक उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारियों द्वारा कार्यक्रम प्रस्तुत किए जिसमें भजन, कव्वाली, भाषण, लघु नाटिका इत्यादि सम्मिलित थे। इस सत्र की अध्यक्षता श्री अजय सहगल ने की और मुख्य अतिथि के रूप में श्री लभाभाई पटेल उपस्थित थे। विशेष आमंत्रित के रूप में श्री रमेश मेहता (पूर्व स्नातक) ने सबकी उपस्थिति में अपार जन समूह व ब्रह्मचारियों की सराहना की।

दिनांक 02 मार्च 2019 से प्रतिदिन प्रातः 5 बजे से 6 बजे तक योग एवं स्वास्थ्य सत्र स्वामी शान्तानन्द जी (भुज) के नेतृत्व में चलाया गया, तदुपरान्त प्रातः 6 बजे से प्रभात फेरी निकाली गई जिसमें भारत भर के ऋषि भक्तों ने बड़े उत्साह से भाग लिया।

दिनांक 03 मार्च 2019 को प्रातः 8 बजे यज्ञशाला में उदघाटन समारोह हुआ जिसमें डॉ0 रमेश आर्य, उपप्रधान, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति, श्री राजीव चौधरी, श्रीमती अमृतापाल आदि प्रमुख यजमान थे। इस अवसर पर श्री जगत वर्मा एवं ब्रह्मचारियों के भजन प्रस्तुत किए गए। इसके साथ ही डॉ. महावीर अग्रवाल (वाईचासंलर, पतंजलि विश्वविद्यालय हरिद्वार) द्वारा विशेश प्रवचन हुआ। इस अवसर पर श्रीमती उषा अरोड़ा (दिल्ली), श्री रघुनाथ राय आर्य (चंण्डीगढ़), श्रीमती अमृतापाल (दिल्ली) श्रीमती भानुबेन (भुज), डॉ0 महेश वेलाणी (भूज), श्रीमती मरवाहा (दिल्ली) आदि को सम्मानित किया गया।

**इस वर्ष प्रथम बार महिला सम्मेलन** का आयोजन आर्य जगत् की महिलाओं के द्वारा आए सुझाव के अनुसार आयोजित किया गया। सम्मेलन का मुख्य वक्य था **''वेद के प्रचार प्रसार में महिलाओं की प्रमुख भूमिका''** कार्यक्रम अपराह्न 1.00 से 2.30 तक आयोजित किया गया जिसकी अध्यक्षता माता सत्यप्रिया (हिमाचल प्रदेश) ने की,

जिसमें श्रीमती अल्पना शर्मा (प्राचार्या आर्य कन्या गुरूकुल राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली), श्रीमती सुमन चांदना, श्रीमती सुधा वर्मा, श्री मृगलानी के मुख्य प्रवचन हुए। इस कार्यक्रम की संयोजिका श्रीमती अरूणा सतीजा जी स्वास्थ्य ठीक ना होने के कारण उपस्थित नहीं हो सकी। श्रीमती अल्पना शर्मा ने अपने वक्तव्य में पूरे भारत में फैली आर्य कन्या गुरूकुलों द्वारा शिक्षित वेद प्रवक्ताओं की चर्चा की वहीं दूसरी ओर आर्य कन्या गुरूकुल राजेन्द्र नगर द्वारा तैयार की जा रही ब्रह्मचारिणयों के विषय में भी जानकारी दी। समस्त भारत में आने वाले वर्षों से यही कन्याएं वेद प्रचार का एक सक्ष्म माध्यम बनेगी। क्योंकि यह जगजाहिर है कि पुरूषों से अधिक माताओं द्वारा दी गई शिक्षा मन एवम् मस्तिष्क पर प्रभावी रूप से जगह बनाती है।

अपराह्न 2.30 बजे से बजे तक **युवा उत्सव एवं पारितोशिक वितरण समारोह** आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता स्वामी शान्तानन्द जी (भुज) द्वारा की गई। मुख्य अतिथि के रूप में श्री देव कुमार, प्रधान गुजरात आर्य वीर दल उपस्थित थे। विशेष आमन्त्रित के रूप में श्री राजीव चौधरी, श्री एस के दुआ उपस्थित थे। इस अवसर पर सौराष्ट्र के स्कूलों एवं कॉलेजों के विद्यार्थियों के लिए टंकारा ट्रस्ट की ओर से बॉलीबाल प्रतियोगिता, प्रश्नमंच, व्यायाम प्रदर्शन, उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारियों एवं आर्य समाज जामनगर की कन्याओं द्वारा वर्तमान सामाजिक समस्याओं पर संदेशात्मक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। प्रतियोगिताओं को नकद पुरस्कार, प्रमाण पत्र व बाहर से आने वालों को किराया दिया गया। **इसी अवसर पर डॉ. मुमुक्षु जी आर्य (नोएडा) द्वारा वेद पाठ की प्रतियोगिता रखी गई)** इस कार्यक्रम का संयोजन टंकारा ट्रस्ट की ट्रस्टी श्री हंसमुख परमार ने किया। इस सत्र के अन्त में पं0 रमेश चन्द्र मेहता (पूर्व स्नातक टंकारा) ने ब्रह्मचारियों को आशीर्वाद देते हुए अपने टंकारा प्रवास के दिनों को याद करते हुए अपने संस्करण सुनाए।

**सांयकालीन यज्ञ सायं** 5 बजे से 7 बजे तक आयोजित किया गया। प्रातः एवं सायं यज्ञ के समय कई महानुभावों को टंकारा ट्रस्ट को दिए जाने वाले अभूतपूर्व योगदान के लिए सम्मिलित किया गया। वेद प्रवचन एवं भक्ति संगीत सम्मेलन रात्रि 8 बजे से 10 बजे तक आयोजित किया गया। इस अवसर पर जहाँ उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारियों द्वारा ऋषि गुणगान के भजन प्रस्तुत किए गए, वहीं मुख्य रूप से श्री जगत वर्मा जोकि जालन्धर से पधारे थे, के भजन हुए। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री योगेश मुंजाल जी ने की और विशेष अतिथि के रूप में श्री लधाभाई पटेल, श्री सुधीर मुंजाल, श्रीमती भानुबेन आदि उपस्थित थे।

**04 मार्च 2019 को शिवरात्रि एवं बोधोत्सव** का मुख्य कार्यक्रम रहा जिसमें प्रातः 9 बजे यज्ञ की पूर्णाहुति की गयी। इसमें मुख्य यजमान डॉ. रमेश आर्य, उपप्रधान, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति, मुंजाल परिवार एवंम् श्री योगेश मुंजाल, श्री सुधीर मुंजाल, श्री लधाभाई पटेल, डॉ0 महेश वेलाणी परिवार सहित आदि उपस्थित थे। सर्वप्रथम श्री डॉ. रमेश आर्य जी ने ब्रह्मा का वरण कर उन्हें तिलक लगाया एवं साथ ही वेदपाठियों का भी वरण किया। तदुपरान्त अग्निद्वान कर यज्ञ आरम्भ किया। तदुपरान्त डॉ. रमेश आर्य सभी को शुभकामनाएं एवं आशीर्वाद ग्रहण करते हुए ध्वजस्थल पर पहुँचे। जहां ट्रस्ट के वयोवृद्ध ट्रस्टी श्री लधाभाई पटेल ने ट्रस्ट की ओर से पगड़ी पहना कर उनका स्वागत किया तदुपरान्त भारत से आए हुए लगभग 150 प्रतिनिधि आर्य महानुभावों ने उन्हें फूलमाला अर्पित कर उनका स्वागत किया। भारत का कोई ऐसा प्रान्त नहीं था। जिसका प्रतिनिधित्व इस अवसर पर न हुआ हो। श्री डॉ. रमेश आर्य ने सभी उपस्थित महानुभावों का धन्यवाद प्रकट किया और उनके द्वारा ध्वजागीत गया।

शेष पृष्ठ- २ पर...


४
अपने कर्म से महान बनो
(स्वामी दयानन्द विधेय)

५
श्री अर्जुन देव चड्ढा हीरक जयन्ती
(कुछ अविस्मरणीय पत्र)

७
सम्पादकीय पृष्ठ
गाय सर्वोत्तम क्यों?
नारी तू ही गुणवान।

८
ऐतिहासिक धरोहर
महाभारतकालीन ऐतिहसिक लाक्षागृह बरनावा

९
रिपोर्ताज
हमेशा यादगार रहेगी टंकारा यात्रा

# आर्यरत्न महाशय धर्मपाल जी पद्मभूषण से सम्मानित

सुमन कुमार वैदिक
नई दिल्ली।

भारत सरकार ने अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त व्यक्तित्व, मसालों के शहंशाह, प्रख्यात समाजसेवी, यज्ञमय जीवन के प्रतीक, उदारमना, कर्मयोगी, एमडीएच लिमिटेड के स्वामी आर्यरत्न महाशय धर्मपाल को राष्ट्र के प्रति उनकी विशिष्ट सेवाओं को देखते हुए राष्ट्रीय सम्मान पद्भूषण से सम्मानित किया है।

उल्लेखनीय है कि हाल ही में दिल्ली के रोहिणी पार्क में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में स्वागताध्यक्ष के रूप में 96 वर्षीय महाशय जी को एक युवा की तरह कार्य करते हुए सभी ने सराहा।

निश्चय ही आर्य जगत के रत्न महाशय जी को प्राप्त इस सम्मान दसे आर्य जगत को एक नई दिशा,

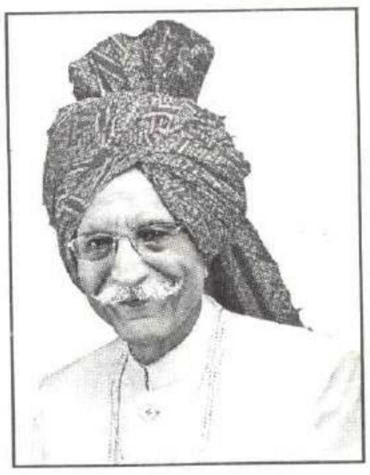

उत्साह, व प्रेरणा मिली है। महाशय जी का जीवन समाज व राष्ट्र के लिए समर्पित है। वे तन, मन, और धन से सामाजिक क्रिया-कलापों में सदैव तत्पर रहते हैं। महाशय जी के सात्विक सहयोग से देश के पूर्वोत्तर भाग से लेकर मध्य और दक्षिण में वेद रिसर्च सेंटर व अनेक स्कूल, कालेज, गुरुकुलों, पुस्तकालयों, वाचनालयों, अनाथालयों, वानप्रस्थ आश्रमों, छात्रावासों तथा सभागारों की स्थापना हुई है। दिल्ली में आर्य मीडिया सेंटर की स्थापना का श्रेय भी महाशय जी को ही जाता है।

यहां यह भी उल्लेखनीय है कि महाशय जी की ख्याति इस कदर व्याप्त है कि टी0वी0 विज्ञापन में आने वाले दुनिया के सबसे अधिक उम्र के स्टार के रूप में की जाती है। उनकी लम्बी आयु तथा स्वस्थ जीवन का राज उनका शुद्ध शाकाहारी भोजन और नियमित किये जाने वाले व्यायाम हैं। वह रोजाना प्रात: चार बजे उठते हैं तथा योगासन के साथ ही प्रात: व सायंकालीन वेला में भ्रमण को जाते हैं।

महाशय जी को प्राप्त इस सम्मान से आर्यजगत में खुशी की लहर है तथा सभी स्वयं को गौरवान्वित अनुभव कर रहे हैं।

## टंकारा में ऋषि बोधोत्सव..... (पृ. १ का शेष

तदुपरान्त एक विषेश मंच से ओ3म् धवज लहराकर षोभायात्र का आरम्भ श्री डॉ0 रमेष आर्य द्वारा किया गया। षोभायात्र में स्वामी षान्तानन्द, स्वामी सच्चिदानन्द, डॉ0 रमेष आर्य, श्री योगेष मुंजाल, श्री सुधाीर मुंजाल, श्रीमती अन्जु मुंजाल, श्री लधााभाई पटेल, श्री हंसमुख परमार, पं0 रमेष चन्द्र महेता, श्री अषोक कुमार आर्य, श्री राजीव चौधारी, श्री रघुनाथ राय आर्य, श्री सुषील भाटिया, श्री राम चन्द्र अरोड़ा आदि उपस्थित थे। लगभग डेढ़ घंटे तक षोभायात्र का संचालन किया गया।

अपराह्न 3 बजे से 5 बजे तक विषेश श्र)ांजलि का आयोजन श्री सुरेष चन्द्र अग्रवाल ऋप्रधाान, सार्वदेषिक आर्य प्रतिनिधिा सभाऋ की अधयक्षता में किया गया। जिसमें विषिष्ट अतिथि के रूप में श्री डॉ0 रमेष आर्य उपस्थित थे। इस अवसर पर मुख्यवक्ता के रूप में पधाारे डॉ0 महावीर अग्रवाल, वाईसचांसलर, पंतजलि विष्वविद्यालय, हरिद्वार ने अपने वक्तव्य में कहा कि टंकारा आर्यो की प्रेरणा स्थली है। यहॉ आकर एक विषेष ऊर्जा का अनुभव हो रहा है। षरीर का रोम-रोम फ्रुलित है यह सोचते हुए कि इस ग्राम के जिस मार्ग से गुजर रहा हूॅ उससे कभी मेरा देव दयानन्द ऋमूल षंकरऋ गुजरा होगा और सम्भवता उन्हीं के पदचिन्हों पर आज मेरे पद भी पढ़ रहे होगें। ;शि भक्तों के लिए इससे अधिाक आनन्द का अनुभव हो पाना सम्भव नहीं। मेरी उपस्थिति आर्यजनों से प्रार्थना है कि यहॉ से प्रतिवर्श आए और यहॉ एक नई प्रेरणा एवम् ऊर्जा लेकर अपने सेवा क्षेत्र में कार्य करें।

महात्मा चैतन्य मुनि ऋहिमाचलऋ ने अपने वक्तव्य में आज पदम्श्री डॉ. पूनम सुरी द्वारा डी.ए.वी. षिक्षण संस्थाओं माधयम से वेद प्रचार और युवा में वैदिक मान्यताओं को प्रचलि एवम् पल्लवित करने का जो क किया जा रहा है उसकी चर्चा और उपस्थित जनसमूह को उन द्वारा इंजीनिरिंग कॉलेज, मेडीक कॉलेज एवम् प्रबन्धान कॉलेजों जाकर जिस प्रकार से प्रचार कि जा रहा है। उसकी चर्चा भी और डॉ. महावीर जी के वक्त को सम्बोधित करते हुए कहा यह बात सत्य है कि इस भूमि आते ही एक नई ऊर्जा का अनु होता है।

आर्य इन्द्रदेव ने अपने वक्त में कहा कि-मैं पिछले कई वर्शों वेद प्रचार में संलग्न हूॅ लेकि टंकारा में प्रथम बार आ रहा जब भी मैंने आने का सोचा तो और मस्तिश्क ने यही कहा कि उस दि नही टंकारा जाऊंगा ;शि ;ण से एक प्रतिषत भी उ होने में सफल हुआ हुंगा। आज समंच से मैं सहर्श कहना चा कि पिछले 2 वर्शों से सत् प्रकाष के प्रचार प्रसार चल परि प्रवचन माधयम को छोड़कर कक्ष के माधयम से सत्यार्थ प्रकाष प्रसारित कर रहा हूॅ। तीन दिन लेकर एक सप्ताह तक की क लेता हूॅ जिसमें बच्चों, युवाओं प्रोढ़ों के लिए अलग-अलग पाठ बना कर सेवा कार्य कर रहा हूॅ इसमें मुझे सफलता एवंम् देष भ अच्छी प्रतिक्रिया प्राप्त हो रही

इस अवसर पर स्व संकल्पानन्द स्मृति सम्मान मह चैतन्य मुनि ऋहिमाचल प्रदेषऋ वेद प्रचारक के रूप में दिया जोकि प्रतिवर्श आर्य प्रतिनधिा मुम्बई की ओर से इस अवस दिया जाता है।

### इन्दिरापुरम में हुआ तेरहकुण्डीय यज्ञोत्सव

# आर्य समाज से ही होगा विश्वकल्याण

**गाजियाबाद ( देवेन्द्र आर्य )।** इन्दिरापुरम स्थित एटीएस सोसायटी में एक दिवसीय आर्य परिवार सम्मेलन भव्यतापूर्वक संपन्न हुआ। इस + अवसर पर 13 कुण्डीय राष्ट्रीय कल्याण यज्ञ का समिति द्वारा भव्य आयोजन किया गया। समरोह के उपरांत प्रीतिभोज का भी आयोजन हुआ। इस आर्य परिवार यज्ञोत्सव में केंद्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य मुख्य अतिथि के रूप में पधारे। उन्होंने अपने उद्‌बोधन में कहा कि आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य संसार का कल्याण करना है। आज आर्य समाज से युवा वर्ग को जोड़ने की विशेष आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि नारी शिक्षा, सामाजिक समानता, गौरक्षा, संस्कृति, संस्कार तथा संस्कृत आदि के प्रचार-प्रसार हेतु आर्य समाज ने एक बड़े आंदोलन को जन्म दिया। आज हम सब वैचारिक क्रांति, स्वदेशी, स्वभाषा, स्वराज्य, तथा वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए आर्यसमाज तथा महर्षि दयानंद के ऋणी हैं।

इस परिवार सम्मेलन में परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री महेन्द्र भाई, भजनोपदेशिका संदेश आर्या ने अपने भजनोपदेश से जनमानस को एक नई दिशा दी। कार्यक्रम की अध्यक्षता समाजसेवी व याज्ञिक विनोद त्यागी ने की।

इस तेरहकुण्डीय यज्ञ के ब्रह्मा. ......... ने यज्ञ को श्रेष्ठतम कर्म बताते हुए कहा कि यज्ञ तीन तत्वों- संगतिकरण, देवपूजा, तथा दान से मिलकर बना है।

इस एकदिवसीय समारोह में सोसायटी व क्षेत्र से पधारे सैकड़ों श्रद्धालु नर-नारियों तथा बच्चों ने सहभागिता की।

कार्यक्रम के संयोजक तथा सूत्रधार देवेन्द्र आर्य ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि आर्य समाज के दस नियम जीवन के उत्थान के सार्वभौमिक सिद्धांत हैं। इनके पालन तथा अनुसरण से ही समग्र कल्याण का पथ प्रशस्त होता है। श्री आर्य ने यह भी संकल्प व्यक्त किया कि इस सोसायटी में आर्य पर्वों तथा विभिन्न विशेष अवसरों पर ऐसे ही भव्य आयोजन नियमित रूप से किये जाते रहेंगे।

इस तेहर कुण्डीय यज्ञ उत्सव की सभी ने मुक्त कंठ से सराहना की। कार्यक्रम का संचालन देवेन्द्र आर्य ने किया। सोसायटी के निवासियों के पावन सहयोग से यह आयोजन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

# धूमधाम से मना ऋषि बोधोत्सव

सुदर्शन आर्य
सोनीपत।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सच्चे शिव अर्थात् ईश्वर के सच्चे स्वरूप को पाकर वेद और सत्यधर्म के माध्यम से मानव जाति के कल्याण के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। हम भी उनकी तरह सच्चे ईश्वर के स्वरूप को जानते-मानते हुए, उसकी कल्याणी वेदवाणी के प्रसार-प्रसार में किंचित समर्पित होवें। अपने महान पूर्वजों, क्रांतिकारियों के बलिदानों को व्यर्थ न जाने दें। युगप्रवर्तक ऋषि दयानंद के बोध रात्रि (शिवरात्रि पर्व) पर इस प्रकार के प्रेरणादायी उपदेश आर्य केन्द्रीय सभा (सोनीपत) के तत्वावधान में आयोजित भव्य समारोह में दिल्ली से पधारे आचार्य भद्रकाम वर्णी ने व्यक्त किये। गुरुग्राम से उपस्थित युवा भजनोपदेश पं0 आचार्य अंकित उपाध्याय के मनोहार भजनोपदेश भी कार्यक्रम का आकर्षण रहे। स्थानीय नेहरू पार्क, गीता कालोनी, सोनीपत में इस भव्य समारोह का आरम्भ वेदप्रचार अधिष्ठाता आचार्य सुधांशु के ब्रह्मत्व में यज्ञ के अनुष्ठान से हुआ।

भव्य समारोह के दौरान प्रमुख व्यवसायी एवं समाजसेवी सुरेश जी ने मुख्य अतिथि के पद को सुशोभित किया। पूर्व प्रधान एवं वर्तमान संरक्षक आर्य केन्द्रीय सभा श्री वेदमुनि ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

सभा के प्रधान रणवीर सिंह ढुल्ल साहब ने उपस्थित विद्वत्जनों, श्रोतावृंद का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम के सफल आयोजन में आर्य केन्द्रीय सभा के पदाधिकारीगण, सदस्यगण ने सक्रिय सहयोग प्रदान किया।


जीवनभर रक्षा हेतु

तैराकी अवश्य सीखिए

: प्रशिक्षक :
दिग्राज सिंह आर्य
ग्रा0/पो0- सरकड़ी अजीज,
तह0/जिला-अमरोहा-244221
मोबा. : 9105573549


## प्रवेश-परीक्षा

### आर्ष कन्या गुरुकुल, हजारीबाग (झारखण्ड)

आर्य समाज, हजारीबाग (झारखण्ड) द्वारा 2011 से संचालित परम्परा के संवाहक आर्ष कन्या गुरुकुल, नवाबगंज, हजारीबाग में प्र की इच्छुक कन्याओं के लिए प्रवेश-परीक्षा दो तिथियों में आयोजित गयी है। पहली प्रवेश-परीक्षा 26 मई एवं दूसरी प्रवेश-परीक्षा 16 जून आयोजित की गयी है। लिखित परीक्षा के साथ मौखिक परीक्षा भी दिन ले ली जाएगी।

विशेष :

1- प्रवेशार्थी की आयु 9 से 12 वर्ष हो।
2- फार्म जमा करने की अन्तिम तिथि 15 मई तक है।
3- प्रवेश-परीक्षा में उत्तीर्ण कन्या ही प्रवेश ले सकती है।
4- आर्ष पाठ-विधि के साथ-साथ आधुनिक शिक्षा का समुचित प्रबन्ध
5- फार्म एवं नियमावली प्राप्त करने एवं भरने के लिए प्रयोग करे
kanyagurukulhazaaribagh@gmail.com
6- अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें- 9430309525, 930888

निवेदक

आचार्य कौटिल्य
संचालक

पुष्पा शास्त्री
प्राचार्या

# धूमधाम से मनाया नवसंवत्सरोत्सव व आर्यसमाज स्थापना दिवस समारोह

**अमरोहा।** आर्य समाज में नव संवत्सर एवं आर्य समाज स्थापना दिवस समारोह चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तदनुसार दिनांक 6 अप्रैल 2019 को धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर पुरोहित चेतन्य मुनि के ब्रह्मत्व में विधि विधान से राष्ट्रीय कल्याण यज्ञ सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में विचार व्यक्त करते हुए संरक्षक हरिश्चन्द्र आर्य ने कहा कि आज के ही दिन संवत् 1932 में युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने मुंबई में आर्य समाज की स्थापना की थी।

समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में अपने संबोधन में डॉ0 अशोक कुमार आर्य ने कहा कि आज के दिन का विशेष महत्व है, क्योंकि इसी दिन जगतपिता ब्रह्मा ने सृष्टि की संरचना की तथा आज के ही दिन सम्राट चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के विजयोत्सव का दिवस है। आज के ही दिन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉ0 हेडगेवार का जन्म हुआ था तथा इसी दिन से युगाब्द का प्रारम्भ होता है। उन्होंने कहा कि वर्तमान में एक अरब सत्तानवें करोड़ उन्तीस लाख उन्चास हजार एक सौ उन्नीसवां वर्ष समाप्त होकर 120वें का शुभारम्भ हो रहा है। आर्य समाज तथा स्त्री आर्य समाज अमरोहा के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस कार्यक्रम में मनोहर लाल आर्य, राजनाथ गोयल, उषा आर्या, डॉ0 बीना रुस्तगी, डॉ0 पी0पी0 सिंह, मधु खुराना, सुप्रिया खुराना आदि ने भी बहुमूल्य विचार व्यक्त किये।

भारत सरकार द्वारा आर्यसमाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में पूर्व में जारी डाक टिकट- केसरी

कार्यक्रम का संचालन करते हुए हेतराम सागर ने कहा कि संसार का कल्याण करने के उद्देश्य से महर्षि ने आर्य समाज की स्थापना की थी तथा उन्होंने ही सर्वप्रथम स्वराज्य, स्वदेशी तथा स्वभाषा का मूलमंत्र दिया।

समारोह में अपने विचार व्यक्त करते हुए प्रधान नत्थूसिंह ने कहा कि आर्य समाज एक समग्र आन्दोलन का नाम है।

इस अवसर पर कार्यक्रम के स्वागताध्यक्ष विनय आर्य ने सभी आगंतुकों का हार्दिक स्वागत किया। समारोह के उपरांत सहभोज का भी श्रद्धापूर्वक आयोजन किया गया।

इस एक दिवसीय आयोजन में सुभाष दुआ, सुरेश कुमार विरमानी, अतुल कुमार अग्रवाल, यशवन्त सिंह, तेजपाल आर्य, आशा आर्या, शकुन्तला देवी, अश्विनी खुराना, संजीव गुप्ता, प्रिया गुप्ता, सत्यप्रकाश खुराना, चित्रा गोयल, आर्येन्द्र कुमार आर्य, देवेन्द्र आर्य, एन0के0 गर्ग, विनय त्यागी, चन्द्रपाल यात्री आदि सहित भारी संख्या में आर्य समाज के सभासद तथा नगर के गणमान्य जन उपस्थित रहे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कृष्णचन्द गोयल ने की तथा आभार आर्य समाज के मंत्री अभय आर्य ने जताया। वैदिक उद्घोष तथा शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

# मुम्बई में गुरुकुल शिक्षा सम्मेलन का आयोजन

**मुम्बई।** आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के सौजन्य से वैदिक मिशन, मुम्बई द्वारा आर्य समाज शांताक्रुज में 'वेदों में शिक्षा विज्ञान' विषय पर गुरुकुल शिक्षा सम्मेलन का भव्य आयोजन 22 से 24 मार्च तक किया गया। सम्मेलन की अध्यक्षता स्वामी प्रवणानन्द सरस्वती ने की। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश, सुरेश चंद्र अग्रवाल, मिठाईलाल सिंह, ठाकुर विक्रम सिंह, प्रकाश आर्य, विनय आर्य, एवं अरुण अवरोल विशेष रूप से उपस्थित रहे।

वैदिक मिशन के अध्यक्ष डॉ0 सोमदेव शास्त्री ने स्वागत भाषण में सम्मेलन के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। आर्यनेता मिठाईलाल सिंह ने अपने उद्घाटन भाषण में गुरुकुलों की आवश्यकता पर बल दिया। गुरुकुल शिक्षा सम्मेलन में आचार्या डॉ0 सुमेधा (चोंटीपुरा), डॉ0 नंदिता शास्त्री (बनारस), डॉ0 गायत्री (वाराणसी), डॉ0 प्रियंवदा वेदभारती (नजीबाबाद), डॉ0 सीमा श्रीमाली (चित्तौड़गढ़), डॉ0 उदयन आर्य (करतारपुर), डॉ0 नागेन्द्र मिश्र (अयोध्या), डॉ0 विजेन्द्र शास्त्री (हरिद्वार), आचार्य प्रदीप शास्त्री (रेबली), आचार्य हरिदत्त (लाडौत), योगाचार्य रामवीर (गरुग्राम), व धर्मवीर शास्त्री (पोरबन्दर) आदि ने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का कुशल संचालन गुरुकुल परिषद के मंत्री डॉ0 धनंजय ने किया।

कार्यक्रम में डॉ0 सोमदेव शास्त्री द्वारा लिखित 'वेदों का दिव्य संदेश' नामक ग्रन्थ का विमोचन भी किया गया। इस अवसर पर गुरुकुल शिक्षा के प्रचार-प्रसार तथा देश के विभिन्न अंचलों में अधिक से अधिक गुरुकुलों की स्थापना करने पर बल दिया गया।

इस अवसर पर आर्य समाज शान्ताक्रुज के समस्त पदाधिकारियों ने विशेषकर रमेश सिंह मंत्री, लाल चन्द्र आर्य, प्रेमकमल टिकिया, राजन बाहटी, राजनारायण सिंह, सुनील मानकटाला आदि के साथ वैदिक मिशन मुंबई के डॉ0 अमीशा परगल, जयन्ती भाई पटेल, व रमेश हासानन्दानी, ओमप्रकाश शुक्ला, चन्द्रगुप्त आर्य व परीक्षित आर्य का विशेष सहयोग प्रशंसनीय रहा।

## गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय

शुक्रताल (जिला- मुजफ्फरनगर) उ0प्र0- 251316

संस्थापक- स्वामी आनन्दवेश (ब्रह्मचारी बलदेव नैष्ठिक)

गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय गंगा के पावन तट पर ऋषि महर्षियों की तपस्थली, प्रकृति के सुरम्य वातावरण में स्थित है। यहां संस्कृत भाषा के साथ-साथ आधुनिक विषयों, जैसे- अंग्रेजी, गणित, इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, तथा कम्प्यूटर आदि का अध्ययन सुयोग्य अध्यापकों द्वारा कराया जाता है। प्रातः सायं हवन एवं यौगिक क्रियाएं करायी जाती हैं। मध्यमा स्तर इण्टरमीडिएट की परीक्षाएं परीक्षाएं उत्तर प्रदेश माध्यमिक संस्कृत शिक्षा परिषद, लखनऊ, तथा महाविद्यालय स्तर का पाठ्यक्रम सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा संचालित है। संस्था में प्रवेश के लिए छात्र का 5वीं पास होना अनिवार्य है।

कृपया अपने बच्चों को संस्कारयुक्त शिक्षा दिलाने हेतु दूरभाष पर वार्ता करके प्रवेश दिलाएं। प्रवेश नियम डाक से अथवा व्यक्तिगत रूप से प्राप्त कर सकते हैं।

विद्यालय में 2 रसोइया, एक वार्डन संरक्षक, एक क्लर्क तथा राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान नई दिल्ली के मानदेय रुपये 96000/- वार्षिक पर तीन संस्कृत अध्यापक व दो आधुनिक विषय के अध्यापकों की आवश्यकता है। शीघ्र संपर्क करें।

स्वामी आनन्दवेश
बलदेव नैष्ठिक
प्रबन्धक
9997437990

प्रेमशंकर मिश्र
प्राधानाचार्य
9411481624

# हीरक जयन्ती व मानव कल्याण महायज्ञ संपन्न

**नई दिल्ली।** आर्य समाज माडल टाउन के स्थापना के 75 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में 28 से 31 मार्च तक भव्य हीरक जयन्ती समारोह तथा मानव कल्याण महायज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर जयप्रकाश शास्त्री धर्माचार्य माडल बस्ती ने यज्ञ कराया, तथा आर्य मिशनरी सतेन्द्र आर्य ने भजनामृत की वर्षा की। इस अवसर पर सर्वदेशिक आर्य नेता व प्रधान स्वामी आर्यवेश ने अपने उद्बोधन में कहा कि आर्य समाज की शरण में आने से ही सारे संसार का कल्याण हो सकता है।

कार्यक्रम में आलोक शर्मा, का0 प्रधान नरेन्द्र कुमार जग्गी उ0प्रधान, आदर्श कुमार मंत्री व प्रेमकुमार कोषाध्यक्ष सहित रवित दीवान, संजीव विज, वेद प्रकाश गोगिया, प्रदीप व जगदीश कुमार आर्य मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

# आर्य प्रतिनिधि सभा की अंतरंग की बैठक २१ को

**वृन्दावन ( मथुरा )।** आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश की अंतरंग सभा तथा असाधारण (नैमित्तिक) अधिवेशन 21 अप्रैल 2019 को पूर्वाह्न 11 बजे गुरुकुल वृन्दावन में होगी। यह जानकारी कार्यालय प्रधान डॉ0 धीरज सिंह तथा सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती (9837402192) ने देते हुए सभी अंतरंग सदस्यों, आर्य समाजों तथा अन्य संस्थाओं के प्रतिनिधियों से बैठक में पधारने की अपील की है।

**प्रवेश सूचना : सत्र : 2019-20**

## गुरु विरजानन्द गुरुकुल महाविद्यालय, करतारपुर

(सम्बद्ध- गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार)

**कक्षा 6वीं, 7वीं, 8वीं, 9वीं, 11वीं और बी0ए0 प्रथम वर्ष**

**प्रवेश परीक्षा- 07 अप्रैल 2019, प्रातः 10 बजे**

1- सम्पूर्ण निःशुल्क शिक्षा (आवास-पाठन-भोजन), 2- सम्पूर्ण संस्कृतमय वातावरण, 3- अंग्रेजी एवं कम्प्यूटर को पढ़ाने की विशेष सुविधा, 4- समय-समय पर आर्य विद्वानों के विशिष्ट व्याख्यान, 5- मल्टीमीडिया एवं पुस्तकालय की विशेष सुविधा, 6- नियमावली प्राप्त करने की तिथि 01 मार्च 2019 से 06 अप्रैल 2019 तक। **सम्पर्क सूत्र :** आचार्य- 98030-43271, अधिष्ठाता- 098887-64311

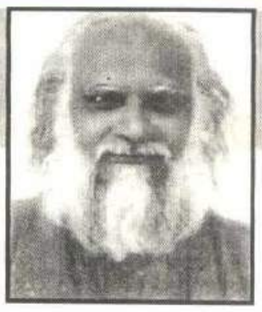

स्वामी दयानंद विदेह

# अपने कर्म से महान बनो

**ओम् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।**
**किसी से न कीजे बुराई किसी की।**
**यदि बन न आए भलाई किसी की॥**
**करो सत्य है जो बड़ों की बड़ाई।**
**करो पर न झूठी बड़ाई किसी की॥**
**राहो सत्य के सर्वदा सब ही साथी।**
**निरर्थक न लो पर लड़ाई किसी की॥**
**कमाओ विपुल धन परिश्रम से अपने।**
**ठगो ढोंग से पर न पाई किसी की॥**
**सदा अपने भुजबल से खाओ कमाकर।**
**महा पाप खाना कमाई किसी की॥**
**रंगा स्यार वह है कदानि न साधू।**
**हरे जो न पीड़ा पराई किसी की॥**
**नहीं इससे बढ़कर है आनन्द जग में।**
**कि टालें बला सिर पै आई किसी की॥**
**ओं त्वं सोमा क्रतुभिः सुक्रतः भूः**
**त्वं दक्षै सुदक्षो विश्ववेदाः।**
**त्वं वृषा वृषत्वेभिर् महित्वा**
**द्युम्नेभिर् द्युम्न्य अभवो नृ-चक्षाः।**
(ऋ0 1-91-2)

**पवित्रात्माओं!**

यह ऋग्वेद का मंत्र सुन्दर प्रेरणा दे रहा है। मेरा मत-पन्थों के साहित्य का अध्ययन करने से विचार बन पाया है कि वेद सबसे ऊंचा मार्गदर्शक प्रेरक ग्रन्थ है। सभी कहते हैं आओ! मैं तुझे शान्ति दूंगा; परन्तु शान्ति होगी, साचार वेद-प्रचार से। क्या वेदपाठ करने से, आहुतियां देने से शान्ति हो जाएगी?नहीं। इनका बाह्य लाभ है। विटामिन 'बी' कम्पलेक्स की टेबलेट्स हैं। जब तक उन्हें खाएंगे नहीं तो लाभ नहीं होगा। केवल कहते रहें। बड़ी ताकत है जाप करते रहने से नहीं। ठीक इसी प्रकार वेदानुकूल आचरण करने से ही सुख-शान्ति प्राप्त होगी। वेद में मानवता की बात है। किसी के प्रति भेद-भाव है ही नहीं। यदि भेद-भाव करता है, तो मानव ही करता है। वेद में समाज विज्ञान है, अर्थविज्ञान है, संगठन विज्ञान है, अध्यात्म विज्ञान है।

मंत्र पर विचार कीजिए- त्वं सोम् त्वम्- तुम केवल सोम हो। कितना सुन्दर सम्बोधन है। तू सोम है।

आज भी गौरीशंकर जी प्रशंसा कर रहे थे, पं0 अखिलानन्द जी झरिया वाले की। वे बड़े सौम्य थे। शान्त-प्रसन्न रहते थे। यदि आप उग्र स्वभाव वाले-अशांत हो तो सौम्य बनो। जीवन में सौम्यता लाओ। मधुरता का अभ्यास करो। कई महानुभावों को देखा गया है, वे सदा उदास रहते हैं। चेहरे पर मुस्कान नहीं। जैसे नानी मर गयी हो। नानी मरना मुहावरा है। अर्थात हर समय चेहरा उदास रखना, शोकावस्था में रहना ठीक नहीं। नानी बड़ी होती है- प्यारी! बहुत प्यार करती है।

एक परिवार देखा- सास बहू ऐसे रहती हैं कि पता नहीं पड़ता, सास-बहू हैं। बिल्कुल मां-बेटी का सा व्यवहार। दोनों ऐसे हंसते-खेलते रहते हैं कि पता नहीं पड़ता।

तो दोनों में कुछ त्रुटियां गलतियां हों, उसे हटाते रहो। इंसान से ही त्रुटि होती है, भगवान से नहीं। विवाद न बढ़ाइए। सौम्यता की साधना करनी है।

सौम्यता लाने का एक तरीका है- सबको धन्यवाद देना शुरु कर दीजिए। सबसे पहले उस सर्व शक्तिमान को धन्यवाद दीजिए-

उसने इतनी सुन्दर काया दी है। हिथ्रो हवाई अड्डे से (लन्दन से) जब भारत चलने लगा, तो औपचारिकता पूरी करता हुआ अन्दर जाने लगा, उसने (ऑफिसर ने) धन्यवाद कहा। मैंने भी धन्यवाद कह दिया। तो धन्यवाद भी सौम्यता का अंग है। छोटा बच्चा पानी का गिलास लाकर देता है, उसे धन्यवाद दीजिए।

तुम पवित्र हो, सोम का अर्थ निष्कलंक पवित्र है। जहां निर्विकारता है। इसीलिए संध्या में 'उदीची दिक् सोमोऽधिपति' कहा गया है। जो पवित्र-शांत-प्रसन्न है, वही सौम्य है, शिष्ट है। आहार की पवित्रता होनी चाहिए। योग में तो और भी जरूरी है, आहार की पवित्रता।

पवित्रता के लिए स्वभाव दोष, व्यसन दोष और चरित्र दोष की परीक्षा करनी होगी। परसों रात्रि आप त्रिदोष-त्याग का संकल्प लेंगे, तैयार रहें। सौम्य बनने के लिए इन दोषों को छोड़ना नितांत आवश्यक है। सौम्यता कैसे प्राप्त हो?-क्रतुभिः सुक्रतुः त्वं, कर्मों के द्वारा सुकर्मा बनना पड़ेगा सदाचारण के द्वारा। कर्म से हम-आप बच नहीं [...] सौम्यता-शान्तता सुकर्म से ही सम्भ[...] कुकर्म से नहीं।

कर्म कर रे कर्म कर, न कर्म से तू जी चुर[...] आप चल रहे हों, खेल रहे हों, व्यापार [...] हों- सब अगर सु है तो ठीक, न[...] पागलपन। यज्ञ सुकर्म है। विद्यार्थी सम[...] सोए और समय पर प्रातः पढ़े तो यज्ञ है। समय पर ठीक ढंग से कार्य यज्ञकर्म है। [...] सोइए, जल्दी उठिए।

गुरु जी कहा करते थे- 'चार [...] घण्टे से अधिक शायद कभी शयन किय[...] इतने कार्य थे। जिम्मेदारियां थीं। मन्त्र में [...] भरा सन्देश है- अपनी जीवन पद्धति को [...] सु हो रही है या कु। एक सज्जन जो वि[...] प्रायः सभी देशों में भ्रमण किया करते [...] पूछा गया- बुराई सबसे ज्यादा कहां है?[...] तपाक से उत्तर दिया- कुकर्म का पहला [...] न्यूयार्क और दूसरा स्थान दिल्ली का है।

अनेक सुन्दर तथाकथित धर्म-[...] हैं; परन्तु एक से एक हथकण्डे भी हैं। [...] सबकी हो, ऐसी विचारधारा से कर्म [...] चाहिए। आत्मा में लज्जा, भय, संकोच [...] होता है, वह कुकर्म है। सुकर्म के [...] सुचिन्तन करना है। 'भूः त्वं दक्षैः - दक्ष[...] द्वारा तुम सुदक्ष बनो। दक्षता क्या है?क[...] कुशलता। सावधानी-जागरूकता से कर्म [...] दक्षता है। इंगलिश में इसे ड्रैक्स्टैरिटी कहा [...] है। रोटी-कपड़े से लेकर आध्यात्मिक स[...] तक चलेगा। बहुत परिश्रम से कार्य [...] सीखो।

## प्यारा ऋषि -

**महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन की प्रेरक घटनाओं पर आधारित चित्रकथा**
**प्रकाशक : आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली से साभार (क्रमशः ...)**

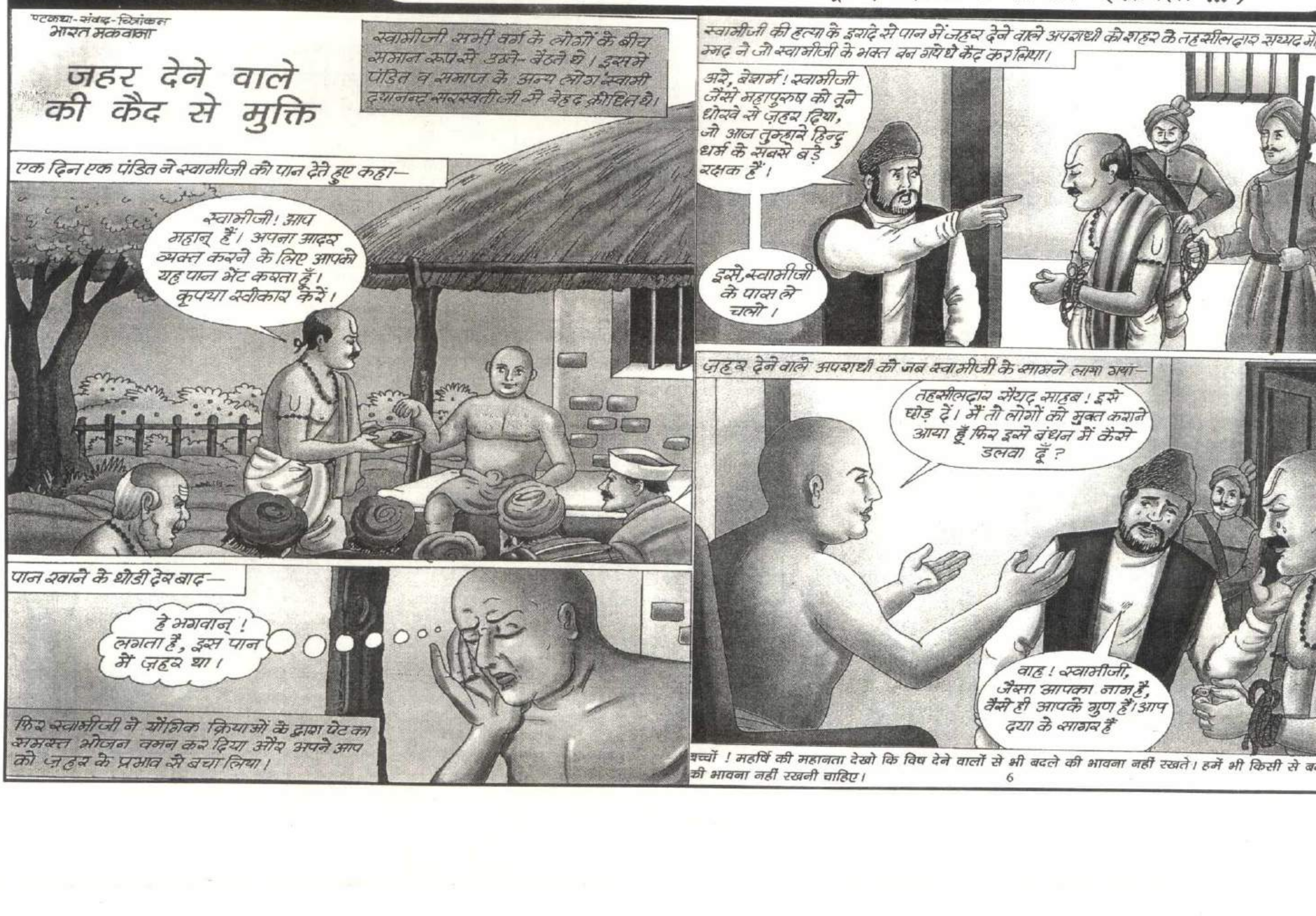

# आर्य नेता श्री अर्जुन देव चड्ढा जी ( कोटा ) की हीरक जयंती : कुछ अविस्मरणीय पत्र

॥ ओ३म॥

## आर्यावर्त केसरी, अमरोहा (उ.प्र.)

की ओर से सादर-भेंट

## अभिनन्दन-पत्र

त्याग तपस्या की प्रतिमा तुम, सत्य ज्ञान के सागर।
मानवता भी धन्य हो गयी, तुमसा मानव पाकर।।

यह 'अभिनन्दन-पत्र' सादर समर्पित है
'अलौकिक प्रतिभा' के धनी एवं सादगी व 'सहजता' के प्रतीक उस महान व्यक्तित्व को; जो विभूषित है दायित्व-बोध से, अलंकृत है सामाजिक-प्रतिबद्धता से, झंकृत है सृजनात्मक-संवेदनशीलता से, पल्लवित है ज्ञान की ऋचाओं से, प्रमुदित है सत्कर्मों की साधना से, अनुदित है आचार शास्त्र के गौरवमयी काव्य से, मंडित है 'स्वं-स्वं चरित्रं शिक्षेरन्' की पावन धारा से,
अर्थात् श्रद्धेय श्री अर्जुन देव चड्ढा जी, प्रधान जिला आर्य समाज, कोटा (राजस्थान) एवं
राष्ट्रीय संयोजक- आर्य युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन, नई दिल्ली को,
जिन्होंने अपनी उदारता, निश्छलता, कर्मठता, अनुशासनप्रियता व समाजसेवा से परमार्थ, परोपकार तथा आर्यत्व का मार्ग प्रशस्त किया है जो एक व्यक्ति नहीं अपितु एक संस्था हैं तथा जिनकी प्रत्येक सुबह आर्यसमाज के मिशन से शुरु होती है और स्वप्न में भी जिनकी परिकल्पना आर्यसमाज ही है। ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व जिनका जन्म वर्तमान पाकिस्तान के तराप तहसील तलादंग, जिला- कैमलपुर में 17 जुलाई 1944 को माताश्री राज कौशल्या तथा पिताश्री रामलाल जी की प्रतिभाशाली सन्तान के रूप में हुआ, जिनके रोम-रोम में दीन-दुखियों, असहायों, बेसहारों, पीड़ित कुष्ठ रोगियों, अनाथों व फुटपाथों पर सोने वालों की चिन्ता बसी है, वृक्षारोपण से लेकर पर्यावरण संरक्षण जिनकी कामना है, जिन्होंने नेत्रदान की भी घोषणा की है, जो वैदिक मिशन के संवाहक हैं, जिन्होंने स्वयं ही नहीं वरन् अपने सभी परिजनों विशेषकर श्री राकेश जी- पूनम जी, मुकेश जी- गीता जी (पुत्र-पुत्रवधू) एवं रंजना जी- कैलाश जी (पुत्री-दामाद) तथा साक्षी, अमन, मानसी, कीर्ति (पौत्री-पौत्र) आदि को एकता, धर्मनिष्ठा व कर्तव्य पारायणता के सूत्र में आवद्ध कर संस्कारवान बनाया है।
हम आर्यसमाज के ऐसे दीवाने, जनमानस की पीड़ा को अपना दर्द समझने वाले, आर्यत्व की धर्म ध्वजा को लहराने वाले विलक्षण व्यक्तित्व श्री चड्ढा जी को कोटिशः प्रणाम करते हैं तथा आज दिनांक- 13 जनवरी 2019 (रविवार) को आयोजित हीरक जयन्ती समारोह में उनके यश, सुकीर्ति, श्रीसम्पदा व वैभवमय जीवन, दीर्घायुष्य व सुस्वास्थ्य की मंगलकामनाओं सहित यह अभिनन्दन-पत्र सादर भेंट करते हैं। जीवेम शरदः शतम्, भूयश्च शरदः शतात्.....।

विनम्रतापूर्वक

**डॉ० अशोक कुमार आर्य**
सम्पादक

**डॉ० बीना आर्या**
साहित्य सम्पादक

---

॥ ओ३म् ॥

श्री अर्जुन देव चड्ढा जी
की सेवा में श्रद्धा स्वरूप सादर समर्पित

## अभिनन्दन पत्र

**श्री अर्जुन देव चड्ढा आर्य जी अपने बचपन से ही मन, वचन, कर्म के साथ वैदिक धर्म के प्रचार कार्य में संलग्न हैं। आपने राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश तथा उत्तर भारत के भिन्न-2 स्थानों पर विभिन्न प्रचार माध्यमों से निःशुल्क वेद प्रचार, सत्यार्थ प्रकाश वितरण तथा अन्य साहित्य वितरित करके आपने सैकड़ों व्यक्तियों को आचरण से वैदिक धर्मानुयायी बनाया।**

**आप विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के साथ मिलकर तथा उनका नेतृत्व करते हुए अपने जीवन को वेदानुरुप याज्ञिक रूप में चरैवेति का सन्देश देते हुए जन सामान्य को प्रेरित कर रहे हैं।**

**आप एक अच्छे वक्ता, लेखक हैं। आपने विभिन्न आयोजनों के माध्यम से जन-जन तक महर्षि दयानन्द का पावन सन्देश पहुंचाया है। आज आप 75 वर्ष की आयु में भी जानलेवा व्याधियों को पराजित करके अहर्निश सेवा में लगे हुए हैं।**

**आप सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में आयोजित किए जाने वाले आर्य परिवार युवक-युवती परिचय सम्मेलनों के 21 आयोजन अभी तक सफलता पूर्वक सम्पन्न कर चुके हैं। आपने दिल्ली के अलावा भारत के विभिन्न भागों में इन परिचय सम्मेलनों का आयोजन राष्ट्रीय संयोजक के रूप में पूर्ण निपुणता के साथ किया है।**

**हम आज आपके 75वें जन्मदिवस के अवसर पर आपको सम्मानित करते हुए गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं और ईश्वर से आपके मंगलमय स्वस्थ्य व दीर्घ जीवन की कामना करते हैं।**

हम हैं आपके

| धर्मपाल आर्य | विनय आर्य | महाशय धर्मपाल | सतीश चड्ढा |
|---|---|---|---|
| प्रधान | महामन्त्री | प्रधान | महामन्त्री |
| दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा | | आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य | |

दिनांक : 13 जनवरी, 2019 कोटा (राजस्थान)

---

ओ३म्

75
अमृत महोत्सव
13/01/2019

श्रीयुत अर्जुन देव चड्ढा जी,

आपके कर्मशील एवं पुरुषार्थी जीवन के 75 वसंत पूर्ण होने के शुभ अवसर पर सम्पूर्ण आर्यजगत की ओर से आपको बहुत-बहुत अभिनन्दन और असंख्य बधाईयाँ।

असीम आनन्द और अपार खुशी के इस मंगलमय 'दिव्य अमृत महोत्सव' पर हम सभी आपके स्वस्थ, प्रफुल्लित एवं दीर्घ जीवन की परम पिता परमात्मा से कामना करते हैं। परिवार, मित्रगण और समाज के सभी स्नेही स्वजनों की शुभकामनाएँ एवं आशीर्वाद आपको निरन्तर प्राप्त होता रहे। आप पहिले से अधिक उत्साह और ऊर्जा के साथ ऋषि दयानन्द के मिशन को पूर्ण करने में सफल रहें, ऐसी शुभकामनाओं के साथ पुनः आपका हृदय से अभिनन्दन करता हूँ।

आपके सभी पुत्र, पुत्रवधु, पुत्री एवं दामाद आदि विशेष धन्यवाद एवं आशीर्वाद के पात्र हैं जिन्होंने अपने पूज्य पिताश्री के अमृत महोत्सव को अत्यन्त गौरवपूर्ण स्वरूप प्रदान किया है।

आपका शुभचिन्तक

(सुरेशचन्द्र आर्य)
प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

आयुष्मान भवः कीर्तिमान भवः यशस्वी भवः

---

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

## आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

पंजीकृत कार्यालय : प्लाट 85/1, मॉडल टाउन, जालन्धर-144 003, पंजीकृत संख्या-18 (1948-49)
प्रशासनिक कार्यालय : मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001
संपर्क : 011-23362110, 23360059

6519

10 जनवरी, 2019

प्रिय श्री राकेश चड्ढा जी

आशा है, आप स्वस्थ और सानन्द हैं।

आदरणीय श्री अर्जुन देव चड्ढाजी के 75 वसंत पूर्ण होने पर परिवार की ओर से गृह-प्रवेश के साथ-साथ एक दिव्य अमृत महोत्सव आयोजित किया जा रहा है-यह जानकर मन अत्यंत प्रसन्न हुआ।

आदरणीय श्री अर्जुन देव चड्ढाजी ने ये 75 वर्ष एक अत्यंत कर्मशील, सेवापूर्ण और परोपकारी जीवन जीते हुए बिताये। मुझे यह जानकर बहुत सुखद अनुभूति हुई कि उनके योग्य पुत्रों और पुत्री के रूप में आप सब में वह सारे संस्कार और सरोकार आत्मसात् रहे हैं जिनको लेकर श्री चड्ढाजी ने आज आर्य समाज परिवेश में एक विशेष स्थान बनाया है। श्री अर्जुन देवजी का संकल्प सचमुच बहुत प्रसन्नतादायक और प्रशंसनीय है। इसके लिए मेरी ओर से हार्दिक बधाई स्वीकार करें।

मेरी ईश्वर से प्रार्थना है श्री अर्जुन देव चड्ढा जी इसी प्रकार स्वस्थ रहें, सक्रिय रहें, तथा देश और समाज की सेवा में लगे रहकर 'जीवेम् शरदः शतम्:', इस वेद उक्ति के अनुसार सौ वर्षों से भी अधिक तक जीयें।

शरीर के अस्वस्थ होने के कारण यद्यपि मैं स्वयं तो उपस्थित नहीं हो पाऊँगा, लेकिन मन से इस अवसर पर आपके साथ ही रहूँगा।

पुनः एक बार मेरी ओर से हार्दिक बधाई स्वीकार करें।

भवदीय

(एस.के. शर्मा)
मंत्री

श्री राकेश चड्ढा जी
1-झ-2, विज्ञान नगर
कोटा (राजस्थान)

आर्यावर्त केसरी
१६-३० अप्रैल २०१९

# आर्य नेता श्री अर्जुन देव चड्ढा जी ( कोटा ) की हीरक जयंती : कुछ अविस्मरणीय

महाशय धर्मपाल

महाशय धर्मपाल जी
(प्रबन्ध निदेशक)

एम.डी.एच. हाउस, 9/44 कीर्ति नगर, नई दिल्ली–110015

प्रधान
आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य
(दिल्ली के 300 आर्य समाज मन्दिरों का संगठन)

अध्यक्ष
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास (उदयपुर)
श्री महर्षि दयानन्द निर्वाण न्यास (अजमेर)
महर्षि दयानन्द गोसंवर्धन केन्द्र (गाजीपुर)

सेवा में,
श्री अर्जुन देव चड्डा जी
प्रधान, जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा

75वें जन्मदिवस की शुभकामनाएं

महोदय, सादर नमस्ते!

आशा है प्रभु कृपा से आप सपरिवार स्वस्थ एवं सानन्द होंगे।

आपके 75वें जन्मदिवस पर आयोजित समारोह में पधारने के लिए आपने स्वयं पधारकर निमन्त्रण दिया था, मैं हर प्रयास करके भी पहुंचने का इच्छुक था। किन्तु 96 वर्ष की आयु होने के कारण तथा वायुयान की अपेक्षित व्यवस्था प्राप्त न होने के कारण मेरा इस कार्यक्रम में पहुंचना सम्भव नहीं हो पा रहा है, जिसका मुझे दुःख है।

मैं आपके जीवन की सफलता के लिए परमपिता परमात्मा से हार्दिक कामना करता हूं और आपको अपना आशीर्वाद प्रदान करता हूं।

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ

आपका
(महाशय धर्मपाल)
प्रधान

---

ओ३म्

अजय सहगल

दिनांक 19-12-2018

आदरणीय श्री अर्जुन देव चड्ढा जी
सर्वदा आनन्दमय रहो, मेरी शुभकामनायें ।

आपके अपने 75वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में निमन्त्रण पत्र प्राप्त हुआ। तदर्थ धन्यवाद ।

पलक झपकते ही आपके सेवा कार्य में लिप्त 75 वर्ष पूर्ण हो गए। आपका जीवन एक संघर्षमय जीवन रहा है। डी.सी.एम. से लेकर आर्य समाज के विभिन्न क्षेत्रों में आपका योगदान महत्वपूर्ण रहा । विशेषतः आर्य मधुर मिलन जिसमें कोटा आर्य समाज की बेटियों एवं बेटों के लिए वर-वधु हेतु कोटा में पंजाबी सभा के माध्यम से सेवा दे रहे थे, उसे अखिल भारतीय स्तर पर लागू करने का श्रेय केवल मात्र आपको जाता है।

सेवा एवं सहयोग का कार्य किसी भी क्षेत्र में हो, आप उस क्षेत्र को अपना योगदान देने में पीछे नहीं रहते, चाहे वह अनाथालय में पुस्तकें, बैग, कपड़े हो, सड़कों पर सत्यार्थ प्रकाश का प्रचार प्रसार हो, दशहरा मेला में आर्य समाज का स्टाल हो, जिसे पिछले कई वर्षो से सबसे अच्छा स्टाल का पारितोषिक प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त है, चाहे वृक्षारोपण का कार्य हो,डेंगु से बचने के लिए पूरे कोटा शहर में दवाईयों के वितरण का कार्य हो और न जाने उससे मिलते जुलते अन्य कार्य हों, उन कार्यो में आप की विशेष भूमिका होती है। इन सभी कार्यो को समाचार पत्रों में प्रचारित करने में भी आप निपुण हैं।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि आप की दीर्घायु हो और ''जीवेम् शरद शतं'' वेद मन्त्र को सार्थक करते हुए निरन्तर सेवा कार्य करते रहें।

शुभकामनाओं सहित--

भवदीय
(अजय सहगल)

---

## कुछ अन्य उल्लेखनीय पत्रों का विवरण इस प्रकार है-

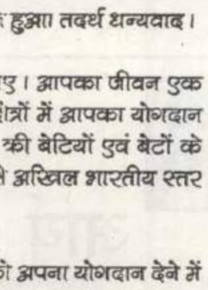

- शान्ति धारीवाल, केबिनेट मंत्री, राजस्थान सरकार (जयपुर)
- अजय एस. श्रीराम- डी.सी.एम. श्रीराम
- आनन्द चौहान, एमिटी इन्टरनेशनल
- अशोक आर्य कार्यकारी प्रधान, सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर
- गट्टानी हॉस्पिटल, ● विभा आर्या, आर्य वीरांगना दल, दिल्ली क्षेत्र ● डी.एस. सरीन, नई दिल्ली, ● चन्द्रमोहन कुशवाह, एडवोकेट, ● राधा वल्लभ राठौर, विष्णु गर्ग, ● ए.के. शर्मा, सरिता रंजन गौतम व सत्यपाल आर्य- डी.ए.वी. कोटा (राजस्थान)

---

पूनम सूरी
प्रधान
डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति
आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

50988

16 जनवरी, 2019
21-1-2019

प्रिय श्री चड्ढा जी,

आशा है, आप स्वस्थ और सानन्द हैं।

13 जनवरी, 2019 को आयोजित दिव्य अमृत महोत्सव में उपस्थित होने का निमंत्रण मिला, इसके लिए मैं आपके सुयोग्य पुत्रों और पुत्री सहित सभी परिवारजनों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

जीवन के 75 वसंत पूर्ण होने पर आपको हार्दिक बधाई। आपने अपने जीवन को समाजसेवा और आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में जिस तरह से लगाया हुआ है, वह हम सब लोगों के लिए प्रेरणादायक है। मेरा जब भी आपसे मिलना होता है या मैं कोटा आता हूँ तो आपसे मिलकर बहुत प्रसन्नता होती है।

मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि वह आपको लम्बी, स्वस्थ और समृद्ध आयु प्रदान करें। आप इसी प्रकार समाजसेवा में लगे रहें और आने वाले युवाओं का मार्गदर्शन करते रहें।

एक बार पुनः मैं और मेरी धर्मपत्नी आपको सपरिवार इस आयोजन पर हार्दिक बधाई देते हैं।

शुभकामनाओं सहित,

भवदीय
(पूनम सूरी)

श्री अर्जुन देव चड्ढा
1-झ-2, विज्ञान नगर
कोटा (राजस्थान)

डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति, चित्रगुप्त रोड, पहाड़गंज, नई दिल्ली-110 055
दूरभाष : 011-23543418, ई-मेल : psuri@milap.com, president@davcmc.net.in

---

॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् (सकल जगत को आर्य बनायें)

## गुजरात प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा

प्रधान: प्रकाश गुलाबचन्द द. आर्य मो. 98240 72509
दूरभाष (079) नि. 26858338 का. 26858780

महामंत्री: परमार हसमुख आर्य
मो. 98793 33348

कार्यालय: आर्यसमाज, महर्षि दयानन्द मार्ग, रायपुर दरवाजा बाहर, अहमदाबाद–380022 दूरभाष: 079-25454373
उपकार्यालय: आर्यसमाज तीन हाटडी, टंकारा, जि. राजकोट –363650 दूरभाष: महामंत्री 02822 - 287841

क्रमांक: 03/09/2019

दिनांक: 03/01/2019

※शुभकामना सन्देश※

समादरणीय श्री अर्जन देव चड्ढा जी,
सादर नमस्ते ।

दिव्य अमृत महोत्सव का निमन्त्रण मिला । तदर्थ धन्यवाद ।

आप अपने क्रियाशील जीवन के ७५ वर्ष पूर्ण कर रहे हैं, यह जानकर अतीव प्रसन्नता हुई ।

संकल्पित जीवन कैसा होता है यह आपने चरितार्थ कर दिया है । अगर व्यक्ति कर्मशील रहता है तो उसे बढती आयु कुछ नहीं कर सकती ।

आप समाज के हर वर्ग से जुडकर उनके लिए कुछ कर गुजरने की भावना रखते हो जिसका लाभ न केवल कोटा की जनता को मिलता है , बल्कि पूरे कोटा जिल्हे में आपकी सेवा भावना की सुगन्ध फैलाई है ।

महर्षि दयानन्द का स्वप्न जाति - पांति तोड कर जातिविहीन समाज निर्माण के लिए गुण - कर्म - स्वभावानुसार विवाह सम्बन्ध अभियान में आपकी भूमिका ने कई सुखी गृहस्थ परिवारों का निर्माण किया है और उनके आशीर्वाद आपके उपर बरस रहे हैं ।

परमात्मा आपको शारीरिक व मानसिक रूप से संपूर्ण सुखी एवं दीर्घायु प्रदान करें और नवनिर्मित भवन में आप सपरिवार पुत्र - पौत्रादि के साथ खुशियां मनाते रहो ऐसी प्रभु से प्रार्थना ।

(हसमुख परमार)
सभा मन्त्री

प्रति
श्री अर्जुन देव चड्ढा
४ - प - २८ , विज्ञान नगर,
कोटा (राजस्थान )
मो. ९४१४१८७४२८

# आधी आबादी किन्तु केवल वोट बैंक, नेतृत्व नहीं

यद्यपि भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था में महिलाओं को समान अधिकार है किन्तु आज भी सदियों से नारी मानवाधिकारों के लिए विभिन्न सार्वजनिक क्षेत्रों खासकर राजनीति में वो स्थान हासिल नहीं कर पाई हैं जिसकी वह वास्तव में हकदार हैं।

इस कारण नारियों में शिक्षा की कमी, राजनीतिक तथा सामाजिक संचेतना का अभाव, सामाजिक रूढ़िवादी, ताना-बाना, उनमें आत्म निर्भरता की कमी तथा समाज में अपेक्षा का होना है। यही कारण है कि महिलाओं को संविधान के तहत वोटिंग राइट तो प्राप्त है किन्तु आजादी के लगभग 7 दशक बीत जाने के बाद भी संसद तथा विधान सभाओं में आबादी के हिसाब से उन्हें सहभागिता या प्रतिनिधित्व प्राप्त नहीं है।

यद्यपि संविधान में महिला जनप्रतिनिधित्व के लिए आरक्षण की व्यवस्था की गयी है किन्तु देखने में यही आता है कि महिला जनप्रतिनिधियों के नाम पर पुरुष वर्ग ही हावी रहता है जैसे ''प्रधान पति''। अत: आवश्यकता इस बात की है कि महिलाओं को आबादी के हिसाब से उन्हें विधायिनी संस्थाओं में भी समुचित प्रतिनिधित्व मिले।

हमारे परम्परागत शास्त्रीय चिन्तन में तथा प्राचीन संस्कृति के अन्तर्गत नारी शक्ति को विशेष स्थान प्राप्त रहा है। मनु स्मृति में महर्षि मनु ने लिखा है कि 'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमन्ते तत्र देवता' अर्थात् जहां नारी का सम्मान होता है वहां देवताओं का वास होता है। ऐसे में नारी शक्ति को आज के परिप्रेक्ष्य में देखने पर ज्ञात होता है कि आज समाज में व्याप्त कुरीतियों, नारी अस्मिता तथा सुरक्षा को लेकर उत्पन्न खतरों के कारण समाज में ऐसे चिन्तन पर ही प्रश्नचिन्ह लग गया। यह बात सत्य है कि आज नारी हर क्षेत्र में चाहे वह शिक्षा हो या चिकित्सा, खेल हो या विज्ञान, साहित्य हो या तकनीक अर्थात् कला संस्कृति विज्ञान और दर्शन किसी भी क्षेत्र में नारी पीछे नहीं है। इसी आलोक में आज राजनीतिक क्षेत्र में नारी शक्ति को लोकतांत्रिक संस्थाओं में अपेक्षित प्रतिनिधित्व की दरकार है। यह बात अलग है कि इन संस्थाओं के गठन के लिए नारी शक्ति को मतदान का अधिकार भी बहुत बाद में मिला है। इसीलिए आज इस दिशा में सशक्त व प्रभावी पहल की आवश्यकता है।

-अतिथि सम्पादकीय- डॉ. बीना रुस्तगी

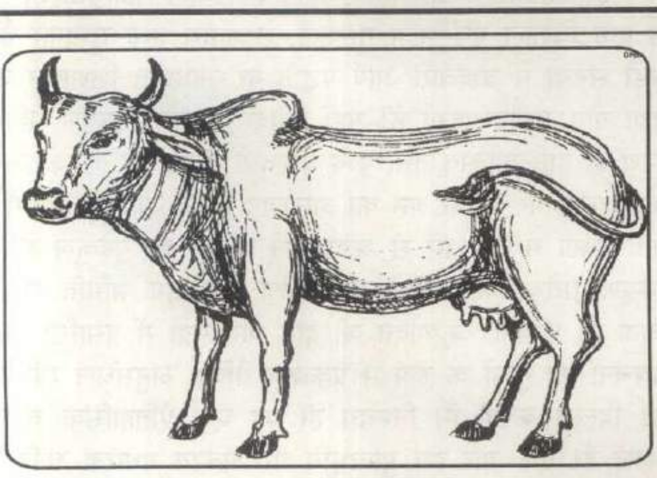

# गाय सर्वोत्तम क्यों

1. गौमूत्र उत्तम औषधि है। आयुर्वेद के ग्रन्थों में पचास से भी अधिक रोगों में इसका उपयोग किया जाता है।
2. कृषि के कार्यों के लिए गाय के बछड़े सर्वोत्तम हैं। भारतवर्ष में आज के मशीनी युग में भी 96 प्रतिशत खेती बैलों से होती है।
3. गाय एक सहनशील पशु है। वह कड़ी धूप व सर्दी को भी सहन कर लेती है। इसीलिए गाय जंगल में घूमकर प्रसन्न होती है।
4. गाय के दूध में सूरज की किरणों से भी निरोगता बढ़ती है। इसीलिए वह अधिक स्वास्थ्यप्रद है।
5. गाय की अपेक्षा भैंस के बच्चे (भैंसा) धूप में कार्य करने में सक्षम नहीं होते।
6. गाय की अपेक्षा भैंस के घी में कण अधिक होते हैं, जो कि सुपाच्य नहीं होते।

# नारी तू ही गुणवान

मोहनलाल मगो

आम सोच यही है कि महिलाएं सिर्फ घर का काम-काज ही अच्छे से कर सकती हैं, लेकिन वास्तविकता यह नहीं है, क्योंकि विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की अलग पहचान बनाने के अनेक उदाहरण हमारे सामने हैं। यहां तक कि कई वैज्ञानिक आविष्कार भी महिलाओं की देन हैं।

1- डिश वासर का महत्व औरतें ही समझ व सराह सकती हैं। जोसेफिन कोकरेन नामक महिला ने इसका आविष्कार किया। इन्होंने ही 1886 में सबसे पहले मशीन के उपयोग से डिशवासर बनाया था, जिसे कोकरेन डिशवाशर के नाम से जाना जाने लगा। वह स्वयं एक अमीर महिला थीं। पार्टियों के बाद गन्दे बरतनों को साफ करने के लिए वह एक मशीन बनाना चाहती थीं, ताकि इस काम को जल्दी किया जा सके। इसी कारण जोसेफिन ने खुद ही एक मशीन तैयार की। इस मशीन के उन्हें मित्रों, होटलों आदि से आर्डर मिलने लगे। बाद में 1893 में वर्ल्ड कोलम्बियन एक्सपोजिशन में इस मशीन का प्रदर्शन किया गया, जिसके लिए पुरस्कार देकर सम्मानित भी किया गया।

2- गाड़ियों के सामने कांच के शीशे को साफ करने के लिए वाइपर की खोज भी एक महिला ने ही की थी, जिनका नाम है मैरी एंडरसन। पहले इस वाइपर का प्रयोग हाथ से किया जाता था। 1905 में अपनी इस खोज का मैरी ने कैनेडिन फर्म को बेचने की कोशिश की, लेकिन कम्पनी ने नहीं खरीदा। इसके बाद 1920 में आटो मोबाइल में बहुत बदलाव आए और इसी दौरान मैरी द्वारा डिजाइन किये गये विंडशील्ड वाइपर की मांग बढ़ी। 1922 में कैडिलैक कार बनाने वाली पहली कम्पनी थी, जिसने इसे स्टैण्डर्ड इक्विपमेंट के तौर पर अपना लिया। आज इसके बिना कोई कार नहीं चलती।

3- बच्चों की पसन्दी चाकलेट चिप कुकीज की खो 1930 में रूथ ग्रेब्स वेकफील्ड न की महिला ने की थी। वह रसोई चाकलेट की कोई रैसिपी बना र थीं, लेकिन उनके पास बे चाकलेट खत्म हो गयी। फिर उन्हे नैस्ले की 'सेमी स्वीट' चाकलेट टुकड़ों से चाकलेट बनाने का विच बनाया। जब इस चाकलेट पिघलाया गया तो यह मक्खन साथ मिक्स होने के बजाय चाकले चिप कुकीज में बदल गय बेकफील्ड ने अपनी यह रैसिपी नैस को बेच दी। यह आज विश्वविख्यात कुकीज है।

4- फेमरन गेम मोनापोली को एक महिला ने ही बनाया था। एलिजाबे जे0 मैगी फिलिप्स ने इस गेम के ज हेनरी जार्ज की सिंगल टैक्स थ्योरी आसानी से समझने का प्रयास कि था। इसे लैण्डलॉर्ड गेम नाम दिया गय बाद में इस पर आधारित कई तरह गेम्स खोली गयीं।

-पी-६५, पाण्डव न
मयूर विहार, दिल्ली-

# लौट चलें वेदों की ओर

रंजनकुमार बहल

श्रेष्ठ मानव सभ्यता, दिव्यता का मार्गदर्शन कराने हेतु वैदिक कालीन मंत्रद्रष्टा, ऋषि-मुनियों द्वारा खोजे गये अपौरुषेय वेद श्रेष्ठ ज्ञान, चारों वेद के उपवेद, वेदांग, उपनिषद एवं दर्शनशास्त्रों से रहस्यमय उपदेश-आदेश अपने गहरे ज्ञान में समेटे हुए है।

**वेदोऽखिलो धर्म मूलम्**

वेद के पठन-पाठन एवं मनन से मानव की आध्यात्मिक दिव्यता ज्ञान-विज्ञान की वह मृत्युंजय धरोहर है। यज्ञमय वेदि से वेदमंत्रों की उच्चारण ऋचाओं द्वारा जो सूक्ष्म तरंग स्पन्दन गति ध्वनि से संपूर्ण औषध मूल प्रकृति एवं पृथ्वी आकाश मण्डल आभा मंडल भी वर्षा सहित हरित क्रान्ति होने लगती है। वेदों के माध्यम से मनुष्य योगमय साधना द्वारा अणमय, मनोमय, प्राणमय, विज्ञानमय, आनन्दमय होकर आध्यात्मिक चेतना पथ पर ईश्वरीय अनुभूति अनुभव से गमनशील आस्थावान रहता है। तथास्तु आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी आदर्श विचारधारा को अपनाते इस सर्वश्रेष्ठ वैदिक शाश्वत ज्ञान प्रजाजन को कल्याणार्थ कराने हेतु उस अनादि अति विशिष्ट, प्रभावशा तेजस, आध्यात्मिक, पौषित वै ग्रन्थ साहित्य संस्कृति संस्कारशाला ओर लौट चलें ''शिव संकल्पमस् (साभार- महर्षि दयानन्द सरस् जयन्ती आर्य समाज)

-भूतपूर्व
गुरुकुल महाविद्याल
ज्वालापुर (हरिद्व

# सायटिका रोग नाशक हरसिंगार

सुमन कुमार वैदिक

हरसिंगार एक सुन्दर वृक्ष है, जिस पर बड़े सुन्दर व सुगंधित फूल लगते हैं। इसके फूल, पत्ते, और छाल का उपयोग औषधि के रूप में किया जाता है। यह सारे भारत में पैदा होता है। इस वृक्ष को पारिजात, हरसिंगार, नाइट जेस्मिन, कहा जाता है।

**गुण-** यह हल्का रूखा, तिक्त, कटु उष्ण, वातशामक, ज्वरनाशक, मृदु विरेचक, शामक, उष्णवीर्य और रक्तशोधक होता है, जो सायटिका रोग को दूर करने में औषधीय गुणों से भरपूर है। इसके पत्ते लगभग 4-5 इंच लम्बे और ढाई इंच चौड़े होते हैं। इसके फल बहुत ही सुगन्धित और सुन्दर होते हैं, जो रात को खिलते हैं और सुबह मुरझा जाते हैं। इसके फूलों से सुंगन्धित तेल बनाया जाता है। इस उड़नशील तेल में विटामिन सी और ए पाया जाता है। इसकी छाल में एक ग्लाइको साइड और दो क्षार होते हैं।

**उपयोग-** इसके पत्तों का सबसे अच्छा उपयोग सायटिका रोग को दूर करने में किया जाता है। पैरों के पिछले भाग में, नीचे बधों (त्रिकाप्रतान) से लेकर नीचे जांघों व पिण्डली के पिछले भाग में तलुओं तक (दोनों पैरों में) एक विशेष होती है, जिसे गृध्रसी कहते हैं। नस में भयंकर पीड़ा होना सायटिका रोग कहा जाता है। यह इतना तेज और अत्यंत कष्ट होता है कि रोगी से बर्दाश्त नहीं और वह मछली की तरह तड़पत इसके लगभग 250 ग्राम पत्ते लीटर पानी में डालकर उबालें। मिक्सी में घोटकर पानी मिलाकर लें। इस पानी में 1-2 रत्ती घोंट-पीसकर डाल कर घोल लें। पानी के बोतल में भरकर रख सुबह-शाम खाली पेट, एक कप पानी पीयें। इससे सायटिका रोग जाता है। वसंत ऋतु में पतझड़ से ये पत्ते गुणहीन रहते हैं, अत: यह वसंत ऋतु में लाभ नहीं करेगा।

# महाभारतकालीन ऐतिहासिक लाक्षागृह, बरनावा

## यहां स्थित गुरुकुल महाविद्यालय में प्रतिवर्ष होता है विशाल एवं भव्य चतुर्वेद पारायण महायज्ञ

मेरठ, बड़ौत रोड पर जनपद बागपत में आज भी विद्यमान है महाभारतकालीन ऐतिहासिक टीला, जहां कभी पाण्डवों को अज्ञातवास के दौरान भस्म करने के लिए

**आधुनिक युग के अद्भुत वेदवक्ता थे पूर्वजन्म के शृंगी ऋषि पूज्य ब्र. कृष्णदत्त जी**

कौरवों के द्वारा लाक्षागृह का निर्माण किया गया। यहां आज भी तत्कालीन गुफाएं मौजूद हैं, जो आगन्तुकों के लिए आकर्षण का केन्द्र है। इस ऐतिहासिक स्थली पर महर्षि महानन्द गुरुकुल महाविद्यालय के नाम से आज बहुत बड़ा गुरुकुल स्थापित है तथा पांच विशाल एवं भव्य यज्ञशालाएं भी हैं, जहां प्रतिवर्ष शिवरात्रि से अगले रविवार से रविवार तक आठ दिनों तक विशाल चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया जाता है, जिसमें क्षेत्र भर सहित देश व विदेश से हजारों श्रद्धालु नर-नारी पधारकर यज्ञ में आहुतियां प्रदान करते हैं। गतवर्ष एक और विशाल यज्ञशाला का यहां निर्माण किया गया है, जिसमें हॉलैण्ड निवासी माता पण्डिता चन्द्रकली जी द्वारा भी विशेष सहयोग प्रदान किया गया। यहां एक विशाल गऊशला भी स्थापित है। इस पावन परिसर में प्रतिवर्ष अनेक कार्यक्रम सम्पन्न होते हैं, जिनमें रक्षाबन्धन (श्रावणी पर्व)पर सामवेद पारायण यज्ञ, ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में त्रिदिवसीय सामवेद पारायण यज्ञ, दीपावली, होली तथा गुरुपूर्णिमा पर वेदपारायण यज्ञों के अनुष्ठान के साथ ही गुरुकुल का वार्षिकोत्सव तथा पांचों यज्ञ-वेदियों पर भव्य चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया जाता है।

इस परिसर में श्री महर्षि महानन्द गुरुकुल महाविद्यालय के नाम से एक विशाल एवं भव्य गुरुकुल, छात्रावास तथा सभागार हैं। जहां बड़ी संख्या में ब्रह्मचारी आर्ष पद्धति पर आधारित शिक्षार्जन करते हैं तथा योग साधना करते हैं। यहां प्रतिवर्ष चतुर्वेद पारायण महायज्ञ के साथ ही होलिकोत्सव तथा पूज्य ब्रह्मचारी कृष्ण दत्त जी के जन्मोत्सव के अवसर पर विचार यज्ञ का आयोजन किया जाता है जिसमें हजारों की संख्या में देश भर से श्रद्धालुजन पधारते हैं। गुरुकुल सहित इस सम्पूर्ण धरोहर का प्रबंधन व संरक्षण गांधीधाम समिति द्वारा किया जाता है। पूज्यपाद कृष्णदत्त जी द्वारा योग मुद्रा में प्रसारित किये गये प्रवचनों का पुष्पों के रूप में प्रकाशन वैदिक अनुसंधान समिति रजि. नई दिल्ली करती है। निश्चय ही यह एक ऐतिहासिक व दर्शनीय स्थल है। एक बार इस पुण्यभूमि पर अवश्य पधारना चाहिए।

महाभारतकालीन लाक्षागृह स्थल पर महाविद्यालय परिसर में स्थापित हैं पांच विराट यज्ञशालाएं- केसरी

**ये है लाक्षागृह स्थित महर्षि महानन्द कूप जिससे अनेक प्रकार की गाथाएं जुड़ी हैं। इस कूप पर अब एक ट्यूबवेल है जिसका पानी जाड़े के मौसम में भी बहुत ही गर्म होता है।**

**ये है महाभारतकालीन एक ऐतिहासिक गुफा। यहां आमने-सामने ऐसी दो गुफाएं हैं। बताते हैं दुर्योधन द्वारा पाण्डवों को भस्म करने के लिए बनाए गये लाक्षागृह में से पाण्डव इन्हीं गुफाओं से बाहर निकले थे। अब ये गुफाएं पुरातत्व विभाग की धरोहर हैं। - केसरी**

महाविद्यालय के प्राचार्य श्री विनोद कुमार शास्त्री

**ये है महाभारतकालीन ऐतिहासिक व खण्डहर टीले पर स्थित एक प्राचीन यज्ञशाला। यहां ऐसे ही कुछ और भगनावशेष हैं जो यहां के प्राचीन वैभव की गौरव गाथा गाते हैं। वर्तमान में यहां एक विशाल गऊशाला भी स्थापित है, जहां देशी नस्ल की अनेक गायें हैं।**

ये है लाक्षागृह स्थित महर्षि महानन्द यज्ञशाला- केसरी

**ठा० विक्रम सिंह**
राष्ट्रीय अध्यक्ष

**डॉ० वरुण वीर**
राष्ट्रीय महासचिव

**अराजकता, भ्रष्टाचार, शेषण, सरकारी लूट-खसोट, तानाशाही, बलात्कार, मुस्लिम तुष्टिकरण, कॉरपोरेट लूट**

**अमीर और भी अमीर / गरीब और भी गरीब**

जनता कंगाल - नेता मालामाल

**क्या इसी के लिए हम स्वतंत्र हुए थे?**

**आइए, मिलकर इन सबके विरुद्ध एक नई आजादी के लिए संघर्ष करें**

**राष्ट्रभक्तों का संगठन**

# राष्ट्र निर्माण पार्टी

**भारत निर्वाचन आयोग द्वारा पंजीकृत राजनीतिक दल**

**क्षेत्रीय कार्यालय : ए–41, लाजपतनगर II, निकट– मैट्रो स्टेशन, नई दिल्ली– 24, फोन : 011–45791152, 29842527, 9313254938**

**प्रान्तीय कार्यालय : मोदीपुरम बाईपास, निकट– रेलवे फाटक, मेरठ (उ०प्र०), फोन : 0121–3191555, 9971284450, 9917063562**

# टंकारा- जहां जन्मे थे ऋषिराज

## आर्यावर्त केसरी प्रबन्ध तंत्र के तत्वावधान में ऐतिहासिक रही ऋषि जन्मभूमि सहित आर्यवन रोजड़, द्वारिका, भेंट द्वारिका, पोरबंदर, भालकातीर्थ, सोमनाथपुरी व द्वीव की यात्रा

इस रिपोर्ताज के लेखक डॉ. अशोक रस्तोगी जो एक लेखक व कवि हैं, पेशे से चिकित्सक हैं। जिनके वेदना व प्रीति के अंकुर जैसे दो श्रेष्ठ कहानी व काव्य संग्रह हाल ही में आर्यावर्त प्रकाशन अमरोहा से प्रकाशित हुए हैं। आप आर्यसमाज, अफजलगढ़ (बिजनौर) के प्रधान हैं। देश की शीर्षस्थ पत्र-पत्रिकाओं में आपके लेख व अनेक कहानियां एकल व धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुई हैं। (सम्पर्क सूत्र- 9411012039) -सम्पादक

डॉ० अशोक रस्तोगी

अमरोहा से प्रकाशित पाक्षिक समाचारपत्र आर्यावर्त केसरी के स्वामी, जेएसएच पीजी कालेज, अमरोहा में राजनीतिशास्त्र के विभागाध्यक्ष डॉ0 अशोक जी रुस्तगी के संयोजन में 26 फरवरी से 6 मार्च 2019 तक अनवरत रूप से गतिमान टंकारा यात्रा का ऐसा जीवन्त वृत्तांत कि पढ़ते-पढ़ते आपका मन भी टंकारा यात्रियों के समूह में जा विराजेगा।

एक ऐसी यात्रा, जिसमें तीर्थाटन भी था, देशाटन भी, और पर्यटन भी। एक ऐसा सुहाना सफर, जिसके कण-कण में आनन्द सम्मिलित था, तो हर्ष व उल्लास की उत्ताल तरंगें भी हिलोरें ले रही थीं।

**२६ फरवरी २०१९ :**

आला हजरत एक्सप्रेस बरेली से प्रात: 6.30 बजे चलकर रामपुर, मुरादाबाद, अमरोहा के यात्रियों को संरक्षण देती हुई 9.30 बजे गजरौला पहुंची, तो हम अफजलगढ़ के 5 यात्रियों के साथ-साथ सैकड़ों यात्री विभिन्न कोचों में प्रविष्ट हो गये।

हमारा पूर्व निर्धारित शायिका पर स्थान ग्रहण करना था कि आनन्दातिरेक में उछल से पड़े। जब हमारा गायत्री मंत्र लिखे केसरिया पटके से अभिनन्दन कर सुस्वादु भोजन का पैकेट हाथों में थमा दिया गया। तत्पश्चात हापुड़, पिलखुआ, गाजियागाद, दिल्ली, गुड़गांव तथा रेवाड़ी आदि स्टेशनों से तीर्थयात्रियों को सहेजती हुई अलवर (राजस्थान) पहुंची।

द्रुतगामी लोहपथगामी यान के गवाक्ष में से दिखाई दे रही थीं ऊंची-ऊंची पर्वत श्रृंखला- कहीं लाल पाषाणी पहाड़, कहीं रेतीले पठार, तो कहीं सपाट नीचे ढलते पथरीले पहाड़, जिन पर शैल-शृंग झाड़ियां, छोटे-छोटे वृक्ष नीलांबर को निहारते प्रतीत हो रहे थे। पर्वतों की उपत्यकता में भवन, ढलवां मकान, झोंपड़ियां, विभिन्न धान्यों से लहलहाते सुविस्तृत खेत, तो कहीं सरसों के पीले-पीले फूलों से सुवासित खेत। राजगढ़, बांदीकुई, जयपुर, अजमेर, आबूरोड होते हुए हम प्रात: मेहसाणा नगर पहुंच गये।

**२७ फरवरी २०१९ :**

भोर का उजाला उस समय तक धरती पर पसरा नहीं था, जब हम लगभग 410 यात्री मेहसाणा रेलवे स्टेशन दसे 8 डीलक्स बसों द्वारा रोजड़वन स्थित **आर्य वानप्रस्थ साधक आश्रम** पहुंचे। कई एकड़ में बना प्राकृतिक आभा से परिपूर्ण विशाल परिसर, ऊंचे-ऊंचे हरे-भरे वृक्ष और पुष्पाच्छादित क्यारियां- सब कुछ मन को मोहित-सा कर गया। एक अत्याधुनिक विशाल कक्ष में दरियां व गद्दे बिछे थे, जहां हमने क्षणिक विश्राम किया और शौच व स्ननानादि से निवृत्त हो, विशाल भोजनालय में स्वादिष्ट भोजन ग्रहण किया, तथा **साबरमती आश्रम** के लिए हमारी बसें चल पड़ीं। दर्शनीय प्रस्तावित तो अक्षरधाम मन्दिर भी था, किंतु समयाभाव के कारण संभव नहीं हो पाया।

साबरमती नदी के तट पर स्थापित इस आश्रम में अंग्रेजों के काल का निर्माण है। कस्तूरबा गांधी का कमरा है।, मेहमानों का कमरा है, गांधी जी के अध्ययन का कमरा है। सभी की ढलावदार छतें काष्ठनिर्मित हैं। एक कक्ष में गांधी जी का प्रिय व विशाल चरखा है। गांधी जी का प्रार्थना भवन भी है, जिसमें उनके जीवन से संबन्धित अनेक महत्वपूर्ण श्वेत-श्याम छाया चित्र हैं। 'नमक छोड़ो' आन्दोलन की भव्य, पाषाणी, जीवंत प्रतीत होने वाली झांकी भी प्रदर्शित की गयी है।

तत्पश्चात् हम बसों द्वारा अहमदाबाद रेलवे स्टेशन पर पहुंचे, जहां से जामनगर इंटरसिटी एक्सप्रेस द्वारा साबरमती, सुरेन्द्रनगर, वेंकामेर होते हुए राजकोट रेलवे स्टेशन पहुंचे, और वहां से बसों द्वारा गोमती, द्वारिकापुरी।

**२८ फरवरी २०१९ :**

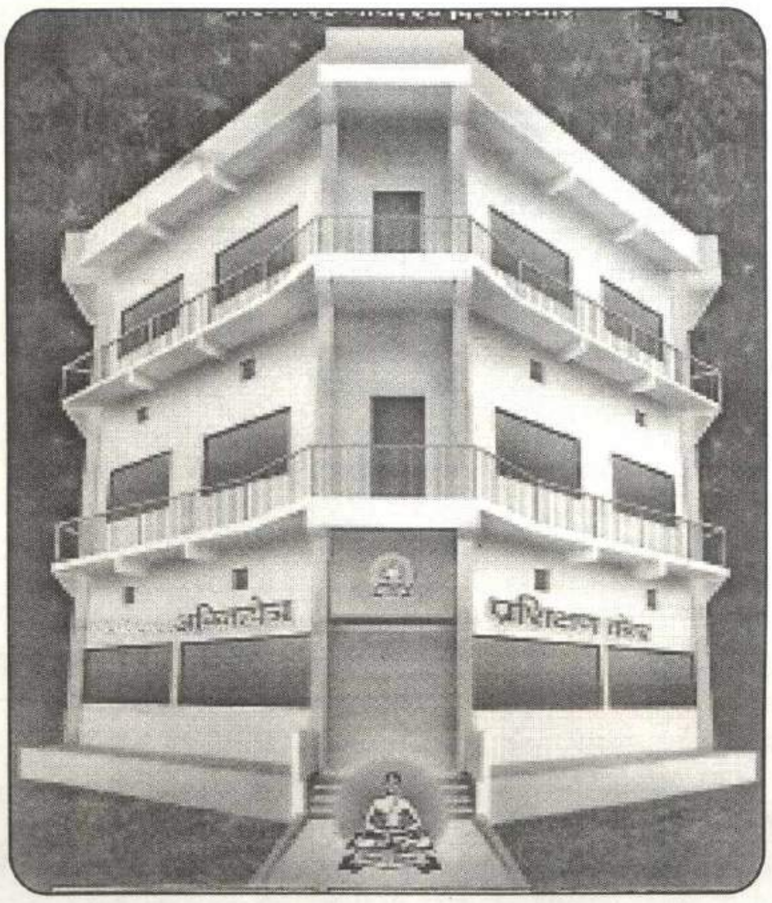

**अग्निहोत्र प्रशिक्षण केन्द्र, आर्यवन रोजड़**

वातावरण में अंधकार व्याप्त था और शीतकण भी विद्यमान थे। जब हमने प्रात: 6 बजे द्वारिकापुरी की ऐतिहासिक पुण्य सलिला धरती पर कदम रखे, महाजनवाड़ी (धर्मशाला) में विश्राम, तथा गोमती नदी के तट पर स्नान। प्राची दिशा से उदित सूर्य के लाल गोले की परछाई नदी की पहरों पर बड़ी मनोहारी प्रतीत हो रही थी।

**द्वारिकापुरी-** जरासंध ने पूर्व की ओर से जब मथुरा पर चढ़ाई की थी, तब पश्चिम की ओर से कालयवन को उभार कर आक्रमण कराया था। श्रीकृष्ण से उस सम्मिलित शत्रुसेना का सामना करने में यादवों को अशक्त पाकर कूट राजनीति का आश्रय लेते हुए मथुरा त्याग कर आनर्त (वर्तमान गुजरात) के निकट समुद्र तट पर कुशस्थली द्वीप में अपने बन्धु-बांधवों को जा बसाया था और इस बस्ती का नाम रखा था- द्वारिका। श्रीकृष्ण के अथक प्रयासों से यादवों की समृद्धशालिनी राजधानी द्वारिकापुरी के रूप में विख्यात हुई। द्वारिका के एक ओर वीचि-विहार करता हुआ समुद्र, दूसरी ओर रैवतक पहाड़, शस्य-श्यामला भूमि, जिधर देखो हरियाली लहलहा रही थी।

56 सीढ़ियां चढ़कर द्वारिकाधीश के 150 फुट ऊंचे देवालय में बड़े-बड़े पाषाणी स्तम्भों पर उकेरी गयीं आकृतियां दूर से ही अकृष्ट कर रही थीं। लगभग 5200 वर्ष पूर्व निर्माण किया गया। यह देवस्थल, जिसके ये द्वार हैं, अष्टपटरानी का बहुत सुन्दर मंदिर है। 16 मन्दिर का प्रासाद है। श्री शारदापीठम द्वारका है, जिसमें आद्य शंकराचार्य महाराज की संगमरमर की प्रतिमा के समक्ष चारों वेद स्थापित किये गये हैं। श्री शारदाम्बा देवी की प्रतिमा भी है।

**भेंट द्वारिका-** द्वारिकापुरी से लगभग 50 किमी0 दूर समुद्र के भीतर एक टापू पर बसी है 'भेंट द्वारिका'। संभवतया सर्वप्रथम श्रीकृष्ण जी ने यहीं अपना राजमहल बनाया था और यहीं सुदामा ने कृष्ण से भेंट की थी। उस समय यह भाग समुद्र के बाहर था, परन्तु किसी समय समुद्र ने कुपित होकर इसे आत्मसात् कर लिया था। तब श्रीकृष्ण ने समुद्र के कोप से दूर सुरक्षित स्थान पर नई द्वारिकापुरी को बसाया था, जिसे गोमती द्वारिकापुरी कहा जाता है। ओखा नगर के समीप समुद्र तट पर से बोट द्वारा पहुंचा जाता है भेंट द्वारिका। यह एक ग्राम पंचायत है। बोट में लेखक (डॉ0 अशोक रस्तोगी) के समीप बैठी एक शिक्षा हिना ने बताया कि भेंट द्वारिका में 3 पब्लिक स्कूल और एक प्राथमिक पाठशाला है। 9000 मुस्लिम और 1000 हिन्दू वास करते हैं। समुद्री वक्ष पर उस समय शताधिक जलपरियां (मोटर बोट) यात्रियों को ढो रही थीं। कुछ व्यापारिक कार्यों में संलग्न थीं।

भेंट द्वारिका में स्थित मन्दिरों का कोई विशेष सौंदर्य नहीं है। हां ऐतिहासिक व अध्यात्मिक महत्व अवश्य है। मार्ग में पड़े ग्रामों के घरों में बहुत बड़े स्तर पर मछलियां सुखाई जा रही थीं, पैकिंग के बाद विक्रय हेतु।

**नागेश्वर महादेव मन्दिर-** नागेश्वर ग्राम पंचायत के अन्तर्गत नागेश्वर महादेव मंदिर में भेंट द्वारिका में लौटते हुए द्वादश ज्योतिर्लिंग के दर्शन किये। बहुत सुंदर देवालय है। मंदिर के बाहर शंकर महादेव की 85 फुट ऊंची बहुत सुन्दर और भव्य प्रतिमा आकर्षण का केन्द्र है।

द्वारिका से सायं 6 बजे चलकर हम रात्रि 8.30 बजे पोरबन्दर पहुंचे। मोहनलाल छोटेबाड़ी एक ऐसा अधुनातन विशाल भवन, जो किसी वैंकट हाल से लेशमात्र भी कम नहीं था। विशाल-विशाल कक्षों में सैकड़ों बिस्तर पंक्तिबद्ध रूप से लगे थे। वहीं पर हमने विश्राम किया। वहीं पर मेरी भेंट हुई मेरे फेसबुक मित्र बिसवां सीतापुर निवासी श्री अजीत जी आर्य से, जो पूरी यात्रा में साथ-साथ रहे।

**१ मार्च २०१९ :**

पोरबन्दर भ्रमण के अन्तर्गत हम सर्वप्रथम पहुंचे सन्दीपनी आश्रम। मुख्य द्वार के भीतर **श्रीहरिमन्दिर** अत्यधिक विशाल और भव्य निर्माण, सुन्दर शिल्प का एक उदाहरण श्वेत संगमरमर से निर्मित सीढ़ियां और गुम्बदपूर्ण भवन, श्रीकृष्ण और राधा की मनमोहक प्रतिमाएं, रमणीय उद्यान में श्रीकृष्ण व सुदामा की जीवन्त प्रतीत होने वाली प्रतिमाएं, दूसरी ओर सुदामा व उनकी पत्नी की प्रतिमा, मंदिर के पृष्ठ भाग में सुन्दर झरना सब-कुछ बड़ा चित्ताकर्षक है।

**आकाश गृह-** एक ऐसा विज्ञान पद्धति आधारित भवन, जिसमें किसी छविगृह की भांति प्रोजेक्टर द्वारा तारमण्डल, चन्द्रकलाएं, सप्तर्षि, चन्द्र की परिक्रमा, ग्रहण व अंतरिक्ष के विभिन्न दृश्य प्रदर्शित किये जाते हैं। **भारत मन्दिर** उसी के सामने 1965 में स्थापित भवन है, जिसमें भारत के विभिन्न प्रदेशों की झांकियां कलाकृतियों के माध्यम से दर्शायी गयी हैं। बाहर दयानन्द वाटिका है।

शेष पृष्ठ- 10 पर....

# टंकारा- जहां जन्मे थे...... पृष्ठ 9 का शेष.....

**रोकड़िया हनुमान मन्दिर** भी समीप ही है, जिसमें बजरंग बली की बहुत सुंदर प्रतिमा है।

महात्मा गांधी जनमस्थल- यह तिमंजिला भवन 22 कक्षों और गलियारा को समाहित किये है। यहीं एक कक्ष में 2 अक्टूबर 1869 को गांधी जी का जन्म हुआ था। कुछ कक्षों की दीवारों को चित्रों से सुशोभित किया गया है। लकड़ी की छतें हैं। लकड़ी के ही सुदृढ़ स्तम्भ हैं और लकड़ी की ही सीढ़ियां हैं। गांधी युग के विभिन्न पात्र हैं। चरखे की विशाल अनुकृति है। इनके जीवन से संबन्धित श्वेत-श्याम बड़े-बड़े चित्र दीवारों पर लगाये गये हैं। विशाल संग्रहालय में उस काल के वस्त्र, चारपाई, तख्त, साज-सज्जा की वस्तुएं, मिट्टी, पीतल, तांबा के पात्र, सुराही, घट पात्र, औषध पात्र, साबुन पात्र, बाल्टी, गिलास आदि अनेकों वस्तुएं शीशे की अल्मारियों में सुरक्षित हैं। भूदान यज्ञ संबन्धी सामग्री भी है। कस्तूरबा गांधी पुस्तकालय भी है।

ये है टंकारा स्थित वह शिवालय जिसने 'मूलशंकर' को बनाया महर्षि दयानन्द सरस्वती। -केसरी

**सुदामा महल-** श्रीकृष्ण के बालसखा भक्त सुदामा का जन्म एव कर्मभूमि पौरबन्दर पौराणिक काल से सुप्रसिद्ध तीर्थ धाम रहा है। संभवतया यही था वह भवन, जिसे श्रीकृष्ण ने बनवाकर सुदामा का भेंट किया था। इसका जीर्णोद्धार सन् 1900 में पोरबन्दर के महाराजा भावसिंह ने सौराष्ट्र की नाट्य कम्पनियों के सहयोग से कराया था। ऊंचे-ऊंचे कलात्मक स्तम्भों पर नक्काशीदार मेहरावदार गुम्बदनुमा छत बनायी गयी है। उद्यान में कृष्ण-सुदामा भेंट संबन्धी प्रतिमाएं स्थापित की गयी हैं।

तत्पश्चात् पोरबन्दर से हम बसों द्वारा सोमनाथपुरी की ओर चले पड़े। मध्य में समुद्रतट के विहंगम नजारे का भी आनन्द लिया। कुछ स्थानीय लोग 100/- रुपये प्रति यात्री की दर से ऊंट की सवारी करा रहे थे।

**सोमनाथ-** पश्चिम में समुद्र किनारे प्रभास, श्रीकृष्ण के राज्य का एक स्थान, समुद्र तट पर स्थापित एक अत्यंत रमणीय नगर, और भव्य सोमनाथ मन्दिर। वहां कभी अतुलनीय धन-सम्पदा, स्वर्ण, हीरे, मोती, जवाहरात हुआ करते थे। किंतु महमूद गजनी ने लूटपाट करके पूर्णतया ध्वंस कर दिया था। जब भारत स्वाधीन हुआ, तो तत्कालीन गृहमंत्री लौहपुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल ने नवनिर्माण कराया था। आज बड़ी शान से, बड़े गर्व से समुद्र तट पर वक्ष ताने अपनी अपनी अनुपम छटा बिखेर विश्व को आकर्षित कर रहा है।

7.30 बजे सायं महाआरती का विहंगम दृश्य उपस्थित होता है और 8.30 बजे पृष्ठ भाग की ओर दृश्य एवं श्रवण कार्यक्रम द्वारा सोमनाथ का संघर्षमयी इतिहास प्रस्तुत किया जाता है।

**२ मार्च २०१९ :**

**भालका तीर्थ-** जहां श्रीकृष्ण का युगान्त हुआ था। सोमनाथ मंदिर से कुछ दूर संगमरमर से निर्मित कलात्मक मन्दिर में श्रीकृष्ण की पाषाण निर्मित कुछ झांकियां, पार्श्व में लगभग 25 फुट ऊंचा विशालाकार शिवलिंग, और पृष्ठभाग की ओर है वह सरोवर, जहां श्रीकृष्ण अपने जीवन की अन्तिम संध्या में चिन्तनलीन थे। आखेटक ने उनके पैर के अंगूठे को मृगनेत्र समझकर विशाक्त शर वेध कर दिया था।

**दीव-दमण-** सोमनाथ पुरी से लगभग 90 किमी0 दूर समुद्र के मध्य बसा दीव एक शहर भी है, जनपद भी और केन्द्रशासित प्रदेश भी। तीन ओर से समुद्र से घिरा है यह। नागवा गांव के अन्तर्गत है नागवा बीच अर्थात् समुद्र तट। अत्यधिक नयनाभिराम दृश्य, समुद्री लहरों से क्रीड़ा करते पर्यटक।

**दीव दुर्ग-** नागवा बीच से लगभग 5 किमी0 दूर, सौराष्ट्र जल डमरू मध्य के दक्षिणी किनारे पर स्थित है प्रायद्वीप, और उसके दक्षिण पूर्वी छोर पर पुर्तगालियों द्वारा 1535 में बनवाया गया दीव दुर्ग। किले में दोहरा प्रवेशद्वार है। सुरक्षा हेतु संट जार्ज बुर्ज बनाया गया। किला तीन दिशाओं से समुद्र से घिरा है। गहरी खाई का निर्माण कर इसे सुरक्षित बनाया गया और सभी बर्जों पर तोपों की तैनाती की गयी। मुख्य द्वार के मध्य 'राजा-रानी' जलकुण्ड बने हैं, जिनमें बरसाती पानी को एकत्र किया जाता था। किले के अन्दर राज्यपाल निवास, जेल, सैनिक बैरक, शस्त्रागार, राजकीय भवन तथा चर्च स्थित हैं। 56735 वर्ग मीटर में विस्तृत इस किले में शस्त्र, बारूद, खाद्यान्न, एवं जल संग्रह की पर्याप्त व्यवस्था थी। संकट काल में भागने के लिए कई भूमिगत सुरंगों का निर्माण किया गया था। पुर्तगालियों के किलों में यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण किला था।

रात्रि दस बजे हम बसों द्वारा ही सोमनाथपुरी से 270 किमी0 दूर टंकारा नामक ग्राम, जहां देव दयानन्द का जन्म हुआ था और सच्चे शिव का बोध हुआ था, प्रात: 3.30 बजे पहुंच गये।

**३ मार्च २०१९ :**

टंकारा एक विकसित
जो तहसील भी है और मौर
के अन्तर्गत आता है। गांव
होते ही महर्षि दयानन्द
विशाल प्रवेशद्वार है। उसी
मीटर दूरी पर है महर्षि
स्मारक ट्रस्ट का अत्याधुनिक
एवं भव्य भवन, जिसका
निर्माण महात्मा सत्यानन्द मुं
ब्रजमोहन मुंजाल (हीरो
मोबाइल्स के स्वामी) द्वार
गया है।

**ऋषि बोधोत्सव, टंकारा :**

26 फरवरी से 4 मा
(सप्ताह भर) तक आयो
देश-विदेश में विख्यात यह
प्रात: 6.30 बजे वेदमंत्रोच्चा
गगनभेदी उद्घोष के साथ प्र
की जाती थी और 9 बजहे
आयोजन पुष्पवल्लरियों,
लिखी पताकाओं तथा वि
शृंखलाओं से सुसज्जित यज्ञ
मुख्य यजमान के रूप में ड
आर्य (उपप्रधान, डीएवी
प्रबन्ध सामित), योगेश मुज
मुंजाल परिवार के सदस्य आ
आचार्य रामदेव जी तथा डॉ0
अग्रवाल (उपकुलपति
विश्वविद्यालय, हरिद्वार),
भजनोपदेशक जगत वर्मा,
तथा वरिष्ठ सुविख्यात भजन
सत्यपाल जी पथिक अमृ
सुमधुर कण्ठ से सुन्दर-सुन्द
का गायन। अपराह्न सभा मे
सभा की अध्यक्षता माता सत
हिमाचल प्रदेश तथा प्रवचन
अरुणा सतीजा- जयपुर व
अल्पना शर्मा- आर्य कन्या
दिल्ली के हुए। सायंकालीन
आर्य कन्या पाठशाला जाम
कन्याओं द्वारा महर्षि
सरस्वती पर आधारित बहुत
मनमोहक अभिनय प्रस्तुत
गया। कुछ प्रतियोगिताएं भी हु

शेष पृष्ठ- 11

आर्यावर्त केसरी प्रबन्ध समिति के नेतृत्व में शोभायात्रा में शामिल उमंग व जोश से परिपूर्ण आर्यों का जत्था -केसरी

# हमेशा यादगार रहेगी टंकारा यात्रा

(पृ.१० का शेष)

बड़ोदरा उपदेशक विद्यालय व गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा योग-प्राणायाम तथा क्रांतिगीत प्रदर्शन बहुत सराहनीय रहा। ब्रह्मचारियों ने परस्पर मिलकर विभिन्न आकृतियां बनायीं, जैसे- विमान, पक्षी-उड़ान, सन्तुलन साधना, दीपक मस्तक पर रखकर योगासन करना, पेड़ से लटकती रस्सी का आश्रय ले योगासन करना, स्तूप निर्माण आदि-आदि। और आग के जलते गोलों को पार करना तो रोंगटे खड़े कर देने वाला दृश्य था।

रात्रि की सभा का आरम्भ गुरुकुल टंकारा के स्नातक आचार्य नितिन जी द्वारा किये गये भजने से हुआ। मुनि चैतन्य जी महराज, आचार्य इन्द्रदेव जी व डॉ0 महावीर जी के प्रवचनों के बाद श्री जगत वर्मा के सुरीले कण्ठ से गाये कर्णप्रिय भजनों का आनन्द श्रोतागण काफी समय तक लेते रहे।

**४ मार्च २०१९ (शिवरात्रि) :**

हमारी टंकारा यात्रा का मुख्य उद्देश्य महर्षि दयानन्द की जन्मभूमि पर आयोजित शिवरात्रि महापर्व में सहभागिता करना था। टंकारा गांव के मध्य घनी बस्ती के बीच स्थित है वह सुन्दर छोटा-सा भवन, जहां वेदोद्धारक उस महान आत्मा ने जन्म लिया था। उस भवन में महर्षि का सम्पूर्ण जीवनदर्शन कला चित्रों के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है। और गांव के पूर्वी दक्षिणी सिरे पर महर्षि बोध मन्दिर में स्थापित है वह शिवलिंग, जिसकी पूजार्चना करते-करते महर्षि दयानन्द को सत्य का बोध हुआ।

महापर्व होने के कारण परिसर में सहस्रों लोगों की भीड़ थी और यज्ञ की पूर्णाहुति भी होनी थी। अतएव यज्ञशाला में मुख्य वेदी के चारों ओर बने बरामदे में भी अनेकों यज्ञकुण्ड रखे गये थे, जहां कोई भी बैठ सकता था।

9 बजे डॉ0 महावीर अग्रवाल व कुछ ब्रह्मचारियों द्वारा यज्ञ संपन्न कराया गया, और 12 बजे ध्वजारोहण किया गया। सुविख्यात भजनोपदेशक पं0 सत्यपाल पथिक द्वारा ध्वजगीत प्रस्तुत किया गया। तत्पश्चात् महात्मा चैतन्य मुनि, स्वामी शान्तानन्द, डॉ0 रमेश आर्य, आचार्य रामदेव आर्य के नेतृत्व में शोभायात्रा प्रारम्भ हुई। विभिन्न आर्य समाजों के श्रद्धालु अपने-अपने बैनर्स हाथों में थामे गगनभेदी जयघोष गुंजारते चल रहे थे। अदम्य उत्साह और उल्लास भरा था हर व्यक्ति के हृदय में।

'**आर्यावर्त केसरी, अमरोहा आर्य समाज**' हमारा बैनर था, जिसके पीछे लगभग 400 श्रद्धालुओं का जत्था उमंग-तरंग से भरपूर जयकारे लगाता चल रहा था। बहुत आनन्द आ रहा था उस शोभायात्रा में। टंकारा के लोगों ने विभिन्न स्थानों पर पुष्पवर्षण से अभिनन्दन किया तो अनेकों स्थानों पर शीतल जल, छाछ, शिकंजी, अंगूर आदि से सत्कार किया। मंत्रमुग्ध कर देने वाला कैसा अनुपम और सुन्दर दृश्य उपस्थित हो गया था। उस शोभायात्रा में, जिसमें धर्म, भक्ति के साथ-साथ राष्ट्रप्रेम का ज्वार भी हिलोरें मार रहा था। परिसर में ही एक ओर बाजार लगा था, जिसमें लगी दुकानों में पुस्तकें, सीडी, ध्वजा, पताकाएं, यज्ञकुण्ड, फ्लैक्सी चित्र, शाकल्य, आयुर्वेदिक औषधियां, यज्ञ संबन्धी ताम्रपत्र, वस्त्र, कैप, पगड़ी, गायत्री मंत्र लिखी घड़ियां, गायत्री मंत्र लिखे उत्तरीय पटके आदि विक्रय किये जा रहे थे। सायं को प्रेरणा सभा आयोजित की गयी थी, जिसमें आर्य जगत के कर्मठ कार्यकर्ताओं, विद्वानों व समाजसेवियों का अभिनन्दन किया गया। रात्रिकालीन सभा को 'श्रद्धांजलि सभा' का नाम दिया गया था, जिसमें आगन्तुकों की प्रस्तुतियों का उद्देश्य रखा गया था, जैसे गीत, कविता, भजन, उद्बोधन आदि, वह भी मात्र दो मिनट में। फिर जगत जी वर्मा व आचार्य नितिन के भजन तथा महावीर जी अग्रवाल व आचार्य इन्द्रदेव के उद्बोधन के उपरांत आयोजन की समाप्ति की घोषणा की गयी। सभी सत्रों का संचालन अजय सहगल सहमंत्री टंकारा ने किया।

**५ मार्च २०१९ :**

प्रात:कालीन यज्ञ में सहभागिता कर हम लगभग 11 बजे टंकारा की पुण्यभूमि को प्रणाम कर बसों द्वारा सामाख्याली रेलवे स्टेशन की ओर चल पड़े थे और 3 बजे आला हजरत एक्सप्रेस में स्थान ग्रहण कर अहमदाबाद, मेहसाणा, अजमेर, जयपुर, अलवर, गुड़गांव, दिल्ली होते हुए 6 मार्च की सायं अमरोहा पहुंच गये।

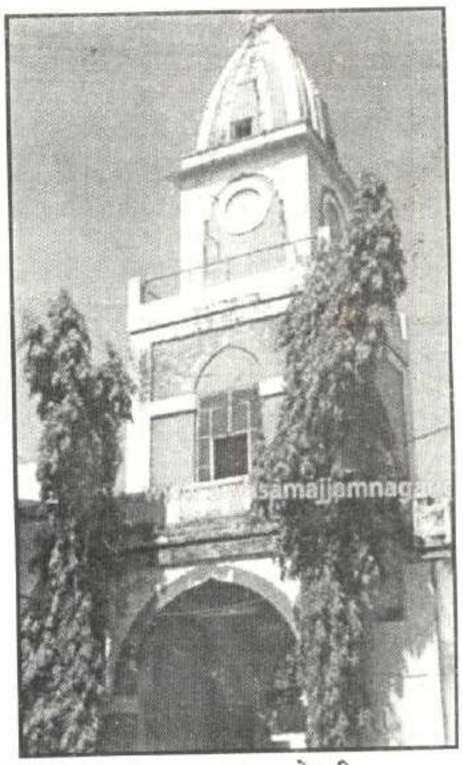

टंकारा स्थित महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म स्थल तथा ऋषि जन्मभूमि टंकारा ट्रस्ट का मुख्य द्वार- केसरी

## टंकारा यात्रा की कुछ अविस्मरणीय मधुर स्मृतियां

- अमरोहा, अफजलगढ़, धामपुर, बिजनौर, बरेली, रामपुर, मुरादाबाद, बिसवां, सीतापुर, लखीमपुर, बदायूं, धनौरा, हसनपुर, गजरौला, देहरादून, सहारनपुर, हरियाणा, गाजियाबाद, दिल्ली, रेवाड़ी, राजपुरा, जयपुर, अजमेर, भिवाड़ी, गुरुग्राम, शाहजहांपुर, हिसार आदि के 410 यात्री यात्रा में साथ थे।
- संयोजक डॉ0 अशोक कुमार आर्य जी- अमरोहा के कुशल प्रबन्धन की भूरि-भूरि प्रशंसा। इस निमित्त टंकारा यज्ञशाला में अजय सहगल द्वारा सम्मानित भी किया गया।
- डॉ0 अशोक आर्य जी और उनकी सहधर्मिणी श्रीमती बीना आर्या हर समय समुचित व्यवस्थाओं के अन्तर्गत दौड़ते ही नजर आये। उन्हें कभी चैन से बैठे नहीं देखा गया।
- मोबाइल फोन चार्जिंग के लिए हर स्थान पर मारामारी मच जाती थी, क्योंकि सभी के पास एंड्रायड फोन थे।
- रोहताश आर्य- गोला लखीमपुर अपनी वृद्धवयस बीमार माता को तीर्थयात्रा करा रहे थे। वे सभी के आकर्षण का केन्द्र और श्रद्धापात्र बने हुए थे।
- गुजरात में विभिन्न स्थानों पर मिश्रित सब्जी, पतली दाल, तक्र, पतली चपाती, चावल, फ्रायड सलाद, पोहा, उपमा, हलवा सूजी का, छोटी-छोटी कचौड़ी, बूंदी, भाकड़ा, पापड़ी, भाकरवाड़ी आदि व्यंजन समय-समय पर परोसे गये।
- गुजरातियों का प्रेम-प्यार व सज्जनता सराहनीय थी। हर स्थान पर बड़ा मधुर व्यवहार किया गया। बड़े प्रेम से पंक्तिबद्ध व सुव्यवस्थित रूप से भोजन कराया जाता था।
- स्वच्छता का विशेष ध्यान- टंकारा में आयोजन स्थल पर गन्दी, अवशिष्ट सामग्री हेतु कई ट्रैक्टर ट्रालियां सुचारू रूप से संचालित थीं।
- 6.30 बजे प्रात: से ही दूध व चाय की व्यवस्था थी।
- शिवरात्रि महापर्व वाले दिन भारी भीड़ के कारण हमारा अनुमान था कि भोजन व्यवस्था चरमरा जाएगी, लेकिन पंक्तिबद्ध सुनियोजित रूप से सब कुछ बड़ी सरलता से निपटता रहा।
- आर्य समाज राजकोट के कार्यकर्ता तथा स्त्री आर्य समाज भुज के सत्कार भाव ने तो मन मोह लिया। बड़ी श्रद्धा व प्रेम से सब भोजन व्यवस्था में जुटे हुए थे। कार्यकर्ता आगन्तुकों की झूठी थालियां अपने हाथों में लेकर गन्दगी पात्र में डालते थे।
- भोजन पात्र में भोजन अवशिष्ट रह जाने पर वे गलती का एहसास भी कराते थे।
- ट्रेन में यात्रा करते समय सभी के गलों में केसरिया पटके पड़े होने के कारण एकरूपता बनी हुई थी। • टंकारा में शोभायात्रा के समय गांव की बहुत-सी वृद्धा माताओं ने अपने घरों के पट खोल बड़े श्रद्धाभाव से जल पिलाने की व्यवस्था कर रखी थी।
- आश्चर्य कि इतने न्यूनतम शुल्क शुल्क (4500/-) में इतनी सुंदन व कष्टरहित व्यवस्था।

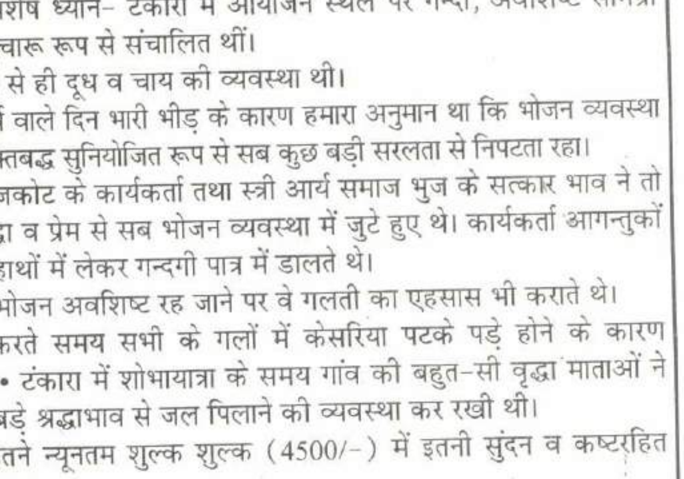


इन आठ डीलक्स बसों से आर्यावर्त केसरी प्रबन्ध समिति के नेतृत्व में सम्पन्न हुई थी टंकारा सहित गुजरात के विभिन्न अंचलों की यात्रा- केसरी

॥ ओ३म् ॥
प्रो० सुषमा गोगलानी
मो0 : 9582436134
प्रतिनिधि
अशोक कुमार गोगलानी
मो0 : 8587883198
HANDICRAFT
# सुषमा कला केन्द्र
आकर्षक स्मृति चिन्ह तथा पारितोषिक सामग्री के लिए सम्पर्क करें।
-: मुख्य आकर्षण :-

पता : C-1/1904, चैरी काउंटी, ग्रेटर नोएडा (वैस्ट)

आर्यावर्त प्रकाशन अमरोहा द्वारा स्थापित

## सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन निधि

**विशेष :** न्यूनतम एक हजार रुपये भेंट करने वाले महानुभावों के चित्र 'सत्यार्थ प्रकाश' तथा आर्यावर्त केसरी में प्रकाशित किये जाएंगे

### घर-घर पहुंचाएं सत्यार्थ प्रकाश

धनराशि अग्रिम भेजना आवश्यक नहीं है, यदि आप चाहें तो यह राशि इस ग्रन्थ के प्रकाशन के बाद भी हमें भेज सकते हैं। आपकी घोषित धनराशि के अनुरूप उतनी ही प्रतियों में आपके चित्र व नाम प्रकाशित किये जाएंगे। धन्यवाद

॥ ओ३म् ॥

ओ३म्

ओ३म्

## कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(सारे संसार को आर्य अर्थात् श्रेष्ठ बनाओ)

श्री, समृद्धि, यश, वैभव, सुस्वास्थ्य व दीर्घायुष्य की दें

## मंगलकामनाएं

जन्मदिवस, वैवाहिक वर्षगांठ, अथवा किसी विशेष उपलब्धि जैसे पावन अवसरों पर अपने परिजनों, मित्रों व शुभचिन्तकों को बधाई व शुभकामनाएं देना न भूलें।

आओ आर्यावर्त केसरी के माध्यम से ऐसे बधाई संदेश व शुभकामनाएं प्रकाशित कराएं...

और प्रदान करें

**आर्यावर्त केसरी के प्रचार-प्रसार यज्ञ में 501/- की सहयोग रूपी पावन आहुति।**

-सम्पादक (मोबा. : 9412139333)

## आर्यावर्त केसरी के सदस्यों से अनुरोध

**आर्यावर्त केसरी** के सभ सम्मानित सदस्यों से अनुरोध कि उनकी वार्षिक सदस्यत अवधि नाम व पते की स्लिप प अंकित रहती है। अतः स्लिप प अंकित अवधि के अनुसा यथासमय अपना वार्षिक सदस्यता सहयोग भेजते रह करें। जिन मान्य सदस्यों ने अभ तक अपनी वार्षिक सदस्यता–राशि जमा नहीं क है, वे कृपया मनीआर्डर द्वा आर्यावर्त केसरी के पते प भेजकर रसीद प्राप्त कर ल ताकि उन्हें आर्यावर्त केस निरंतर मिलता रहे।

## आर्यावर्त केसरी के आजीवन व संरक्षक सदस्य बनें

**आदरणीय बन्धुओं! सप्रेम अभिवादन,**

**आर्यावर्त केसरी आपका अपना पत्र है, जो विश्वभर में वैदिक संस्कृति, राष्ट्रीय चिन्तन व आर्यत्व के प्रचार-प्रसार के लिए संकल्पबद्ध है। आर्यावर्त केसरी की संरक्षक सदस्यता सहयोग राशि रु० 3100/- तथा आजीवन सदस्यता हेतु सहयोग राशि रु० 1100/- है। कृपया अपनी सदस्यता सहयोग राशि भारतीय स्टेट बैंक, अमरोहा स्थित 'आर्यावर्त केसरी' के बचत खाता संख्या- 30404724002 (IFSC कोड : SBIN0000610) में जमा करा सकते हैं, अथवा चैक या धनादेश द्वारा भेज सकते हैं। सभी मान्य संरक्षक सदस्यों व आजीवन सदस्यों के रंगीन चित्र व शुभ नाम प्रकाशित किये जाएंगे। इस प्रकाशन यज्ञ में आपकी सहयोग रूपी आहुति प्रार्थनीय है। धन्यवाद,**

**डॉ. अशोक कुमार आर्य, सम्पादक- आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.), दूर. -05922-262033, चल.- 09412139333**

**आइये! आज ही आर्यावर्त केसरी के मिशन से जुड़िए...**

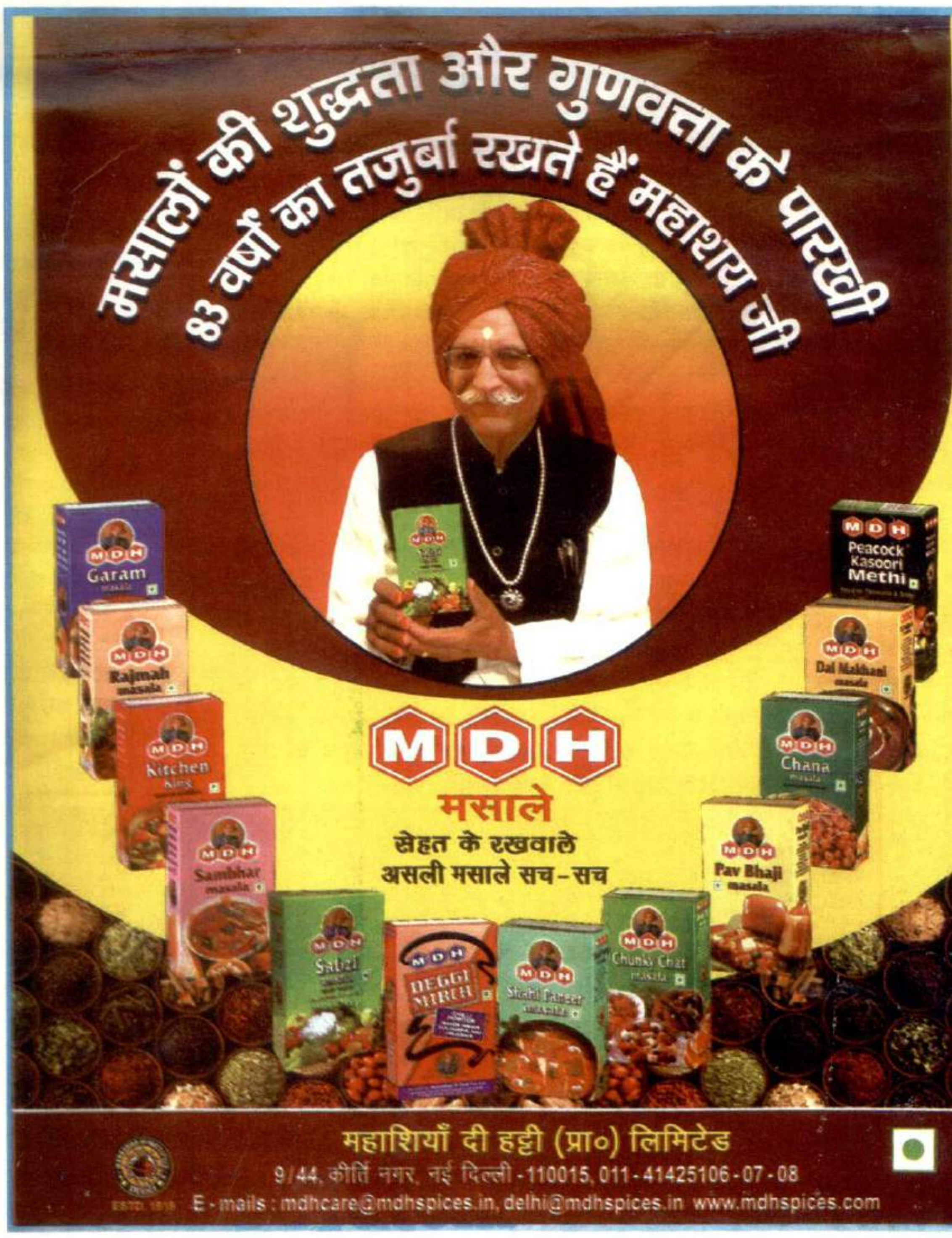


डॉ. अशोक कुमार आर्य-प्रकाशक, मुद्रक, व स्वामी द्वारा स्टार प्रिंटिंग प्रेस के लिए आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा से मुद्रित व कार्यालय-
**आर्यावर्त केसरी**
मुरादाबादी गेट, अमरोहा
उ.प्र. (भारत) -२४४२२१
से प्रकाशित एवम् प्रसारित।
☎:05922-262033,
9412139333 फैक्स : 262665
डॉ. अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक
E-mal :
aryawartkesari@gmail.com

**आर्यावर्त केसरी**
संरक्षक
स्वामी आर्येश आनन्द सरस्वती
प्रबन्ध सम्पादक- सुमन कुमार 'वैदिक', (मोबा : 9456274350)
सह सम्पादक- पं. चन्द्रपाल 'यात्री'
समाचार सम्पादक- सत्यपाल मिश्र,
डॉ. यतीन्द्र विद्यालंकार,
डॉ. ब्रजेश चौहान, अमित कुमार
मुद्रण- इशरत अली
साहित्य सम्पादक- डॉ. बीना रुस्तगी
प्रधान सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य